ISBN-978-93-340-5985-4

केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन



- राजीव अग्रवाल
- ज्ञान प्रकाश
- दिव्यानी सक्सेना

केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

ज्ञानप्रकाश

M.A.(yoga), M.Ed.

दिव्यानी सक्सेना

M.A.(English), B.Ed.

केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

ज्ञान प्रकाश

दिव्यानी सक्सेना

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: ₹ 49

ISBN: 978-93-340-5985-4

प्रकाशक

दिव्यानी सक्सेना

तुलसी नगर, उरई

जिला, जालौन (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड — 285001

मो.— 7392088689

ई-मेल:manshisrivastav01@gmail.com

प्राक्कथन

केशव तिवारी लोकधर्मी काव्य धारा के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी कविताओं में बांदा की धरती की सुगन्ध और लोक जीवन की मिठास विद्यमान है। कवि की मानवीय संवेदना जन साधारण,किसान, श्रमिक, गांव, समाज, लोक परम्परा आदि से गहन रूप में जुड़ी हुई है। इनकी कविताओं में ग्राम्य जीवन का सुन्दर, सजीव और संघर्षमय चित्र उभरता है। जहां एक ओर इनकी कविताओं में बदलते समाज का चित्र दिखाई पड़ता है, तो लोक परम्परा का सम्मान भी देखने को मिलता है। समृद्धि तथा आशा सूचक चित्र मिलते हैं, तो वहीं दूसरी ओर धूप की चांदनी और सूर्य का ताप भी है, जो साधारण जनता में पौरुष का बल और परिवर्तन की शक्ति भरता है। कवि कविता के सहारे जनता जनार्दन तक पहुंच कर आम आदमी के जीवन में बदलाव की आग जलाना चाहता है।

आधुनिक युग में रचना करने के उद्देश्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है, इस परिवर्तन का आधार विश्व में विकसित नवीन मूल्य हैं, जैसे - लोकतंत्र, क्षमता, भारत और चराचर के प्रति मानवीय प्रेम जिससे एक शब्द में मानवता कह सकते हैं, उक्त मानवीय मूल्यों को लोग जीवन में स्थापित करने के हेतु कभी कविता को एक साधन के रूप में चुना है और अपने काव्य में शैक्षिक मूल्यों को विद्युत रूपों का यथार्थ चित्रण किया है। जिससे लोग संवेदनाओं का महत्व और शैक्षिक मूल्य की स्थापना होती है। कवि केशव तिवारी के काव्य में वे सभी गुण मौजूद है, जो एक श्रेष्ठ शैक्षिक मूल्य में होने चाहिए। अतः कवि की काव्य रचनाओं में शैक्षिक मूल्य के साहित्य से जोड़कर देखने का प्रयास ही इस शोध पुस्तक का अभीष्ट है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है **"केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन"।** इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है –

प्रथम अध्याय - इस अध्याय में शिक्षा के विकास की प्रक्रिया, हिंदी शिक्षण का स्वरूप, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन की आवश्यकता, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन विधि, तथा अध्ययन के महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय - द्वितीय अध्याय के अंतर्गत अध्ययन से संबंधित कतिपय शोध कार्यों की समीक्षा एवं निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय - इस अध्याय के अंतर्गत केशव तिवारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर रोशनी डालने का प्रयास किया गया, जिसमें उनके बाल्य जीवन, अध्ययन यात्रा, जीविका, गृहस्थ जीवन, उनके रचनाकर्म व पुरस्कारों का वर्णन किया गया।

चतुर्थ अध्याय - चतुर्थ अध्याय केशव तिवारी जी की साहित्य संरचना पर केंद्रित है जिसमें उनके प्रकाशित काव्य संग्रह तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

पंचम अध्याय - पंचम अध्याय केशव तिवारी की चयनित कविताओं में निहित शैक्षिक मूल्य पर आधारित है जिसमें उनकी चयनित कविताओं की शैक्षिक प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की गई है।

षष्ट अध्याय - इस अध्याय में निष्कर्ष एवं सुझावों का विस्तार से वर्णन किया गया है, साथ ही शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध-कार्यों के लिए सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सौद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है, इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने के नितांत आवश्यकता होती है। एक मनुष्य के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य की पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्‌वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

डॉ. राजीव अग्रवाल

ज्ञान प्रकाश

दिव्यानी सक्सेना

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1. शिक्षा विकास की प्रक्रिया

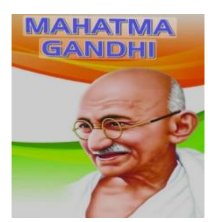
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाया जाता है।

भारत एक ऐसा देश है जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति तथा आदर्शों एवं परम्पराओं का ही प्रभाव था कि सम्पूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार हुआ। यहाँ यह स्वभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था स्थापित करना और आदर्शों एवं परंपराओं को निर्धारित करना कैसे संभव हो सका तो इस प्रश्न का उत्तर है, अद्वितीय शिक्षा व्यवस्था उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के द्वारा भावी पीढ़ी का उच्च आदशों आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं और सांस्कृतिक संपत्ति को इस प्रकार हस्तांतरित करता है कि व्यक्ति के हृदय में सद्भाव तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है।

शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बालक शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। वह समाज से तभी जुड़ पाता है, जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं, तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है- व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है। जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि अनौपचारिक रूप से होता है। वही सीखना सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं| संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर सम्बन्धित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों व नीतिकारों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार दिए हैं। शिक्षा के अर्थ को समझने में ये विचार भी हमारी सहायता करते हैं। कुछ शिक्षा सम्बन्धी मुख्य विचार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।



- "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"
  (महात्मा गांधी)

- "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

(स्वामी विवेकानन्द)



- "शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है, जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रखकर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सके।"

(जॉन ड्यूवी)



आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन नहीं माना जा रहा है, परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती; तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आज भारत में फैली सामाजिक बुराइयों नैतिकता का ह्रास अनुशासनहीनता, मूल्यों का ह्रास आदि समस्याओं का हल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना होगा। यह भारतीय विद्वानों शिक्षाविदों के शैक्षिक विचार एवं प्राचीन साहित्यों में वर्णित शैक्षिक विचारों का अध्ययन कर कुछ धर्मगुरूओं एवं समाज सुधारकों द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन कर उसके आधार पर एक नई शिक्षा प्रणाली स्थापित करने पर ही संभव है।

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्त्व पूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महत्त्व पूर्ण भूमिका होती है। प्रारम्भिक अवस्था में बालक के सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे धीरे जब बालक बड़ा होता है, तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार, समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है। शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित मानव के रूप में परिवर्तित हो जाता है| शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है, क्योंकि मानव विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च प्राथमिक शिक्षा अपना महत्त्व पूर्ण योगदान देती है, क्योंकि यह माध्यमिक शिक्षा का आधार स्तम्भ है। शिक्षा मानव को एक अच्छा इन्सान बनाती है| यह व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यहाँ प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

1.2 हिंदी शिक्षण का स्वरूप

हिंदी भारत की राजभाषा और संपर्क भाषा है। भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ अनेक विविध प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता है। इसीलिए उत्तर भारत में प्रथम भाषा होने के साथ-साथ देश के अनेक राज्यों में हिंदी की स्थिति द्वितीय भाषा और कुछ राज्यों में तृतीय भाषा की है। इसके अलावा विश्व के अन्य अनेक देशों के विद्यार्थी भी हिंदी सीखते हैं। इन सभी रूपों में हिंदी का शिक्षण हिंदी भाषा 'शिक्षण' है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण को निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं-

- प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण
- द्वितीय (और तृतीय) भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण
- विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण

प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण हिंदी भाषी क्षेत्रों में किया जाता है। इन क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में हिंदी का व्यवहार होता रहता है, इसलिए हिंदी के औपचारिक और साहित्यिक स्वरूप का ही शिक्षण किया जाता है। भाषा कौशल की दृष्टि से केवल पढ़ना और लिखना कौशलों का शिक्षण ही अपेक्षित होता है। द्वितीय और तृतीय) भाषा के रूप में हिंदी सीखाने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। वहाँ अध्येता की मातृभाषा का भी व्याघात होता है। विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए और अधिक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि वहाँ हिंदी का परिवेश भी उपलब्ध नहीं होता। द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में अध्येता का उद्देश्य भी महत्त्व पूर्ण होता है कि वह हिंदी क्यों सीखना चाहता है।

अतः हिंदी भाषा शिक्षण एक बड़ा क्षेत्र है, जिस पर भाषा की दृष्टि से अलग-अलग विचार किया जा सकता है, क्योंकि भाषा शिक्षण की प्रविधि और सामग्री इस बात पर भिन्न हो जाती है कि अध्येता किस रूप में हिंदी को सीखना चाहता है।

वर्तमान परिवेश में हिंदी भाषा शिक्षण को तकनीकी माध्यमों से जोड़ना नितांत आवश्यक है। यदि हिंदी भाषा शिक्षण को वर्तमान तकनीकी जगत के साथ अद्यतन (update) करना है, तो यह आवश्यक है कि डिजिटल माध्यमों का हिंदी भाषा शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाए। डिजिटल माध्यमों से तात्पर्य है- कंप्यूटर और मोबाइल। आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर की भूमिका अपरिहार्य है। शिक्षण-प्रशिक्षण भी इससे अछूता नहीं है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग आवश्यक है।

वर्तमान समय में मोबाइल केवल संचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह मिनि कंप्यूटर के रूप में कंप्यूटर द्वारा किए जाने वाले अनेकानेक कार्यों को हमारी मुट्ठी में रहते हुए संपन्न कर रहा है। इसीलिए सामान्य संचार के लिए प्रयुक्त मोबाइल फोनों से अलग इन्हें स्मार्टफोन कहा जाता है। हिंदी भाषा शिक्षण को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मोबाइल और स्मार्टफोन प्लेटफॉर्म का भी अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित है।

1.3 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएं

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के अतिरिक्त प्रशासन और व्यवसाय जैसे तत्वों के समाविष्ट होने के कारण इसकी दशा और दिशा एक सामान्य शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न हो चुकी है। इसका मूल उद्देश्य अक्षर ज्ञान से शुरू होकर जीविकोपार्जन के किसी साधन तक सीमित हो चुका है। जिसके चलते मनुष्य का सर्वांगीण विकास बाधित होता है। इस बाधा के उत्पन्न होने के कारण समाज में विभिन्न प्रकार की कुंठाओं और वैमनस्य का अंकुरण होता है, जो आगे चलकर एक बृहद समस्या का रूप धारण कर लेता है, जिनमें भेदभाव, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार तथा साम्प्रदायिकता प्रमुख है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता के आधार पर कुछ विशिष्टतायें है, परन्तु वह उपयोगिता मनुष्य को भौतिक संसाधनों के चरम सुख की तरफ ले जाती है। भौतिक संसाधनों की अधिकता और कमी के आधार पर समाज का विघटन होना शुरू हो जाता है और मनुष्य उच्चवर्गीय, मध्यम वर्गीय तथा निम्न वर्गीय श्रेणियों में गिने जाने लगते हैं, जबकि शिक्षा का लक्ष्य असमानता उत्पन्न करना नहीं होता, वरन् मानव पीढ़ी के भीतर विद्यमान गुणों को विकसित करते हुए उन्हें पूर्णता प्रदान करना होता है। साथ ही भौतिकता नैतिक मूल्यों से सरक्षित रहती है, जिसका विकास आध्यात्मिकता से होता है, जो कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अंग नहीं है| शिक्षा एक मूलभूत आवश्यकता होती है, ताकि हमारी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आवश्यकतायें पूर्ण हो सकें तथा इस आधार पर ही किसी शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन किया जा सकता है। इस शिक्षा पद्धति में आर्थिक आवश्यकता के अतिरिक्त कोई अन्य आवश्यकता को आवश्यकता नहीं समझने की भूल की जाती है, जिसके चलते समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है और इनमें से कुछ समस्याओं की अप्रत्यक्ष रूपरेखा निम्नलिखित हैं| जिनके समाधान व्यक्तिगत रूप से भले ही तलाश किये जाएँ, परन्तु सामूहिक रूप से उनकी स्वीकार्यता होनी चाहिये।

आधुनिक शिक्षा पद्धति की अपनी अलग ही विशेषता है, पर दुर्भाग्य है कि यह जीवन में आर्थिक निर्भरता प्रदान करने तक ही सिमट कर रह गई है। सामाजिक समृद्धि एवं प्रतिष्ठा का इसमें समावेश तो है, पर इसका उपयोग कैसे किया जाए इसकी अनभिज्ञता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समग्रता का पूर्णतया अभाव है। हम शिक्षा ग्रहण कर समग्र एवं सुदृद्ढ सोच का निर्माण करते करते हैं। जिससे जीवन का समग्र विकास हो; पर यह तभी संभव है, जब हमें इसकी सही एवं स्पष्ट जानकारी हो। पुराने समय में शिक्षा ज्ञानदान की पुण्य परम्परा थी, जो कि आज महज पैसा एकत्र करने की योजना बन कर रह गई है। पहले योग्य आचार्य जो अपने अन्दर ज्ञान का अनंत भण्डार संग्रहित किये रहते थे| वे विद्यार्थियों को समुचित शिक्षा प्रदान कर उनका मार्ग आलोकित करते तब शिक्षा निःस्वार्थ सेवा थी। जो सर्वजन हिताय को दर्शाती थी| यही कारण था कि उन दिनों योग्य छात्रों की अधिकता थी या यों कहें वहाँ योग्य छात्रों का जमावड़ा रहता था। यही विद्यार्थी आने वाले समय में अपने राष्ट्र एवं समाज को अपने मजबूत कंधों का सहारा देते थे। यही था हमारे स्वर्णिम भारत का रहस्य| पहले जहाँ शिक्षा उपहार स्वरूप थी, आज वहाँ सिर्फ व्यवसाय का स्रोत है। आज एक से बढ़कर एक शैक्षणिक प्रतिष्ठान नित जन्म ले रहे हैं, जहाँ सिर्फ धनाढ्य वर्ग के बालक ही शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। वहाँ छात्रों की योग्यता का विशेष मतलब नहीं होता| मतलब तो बस उसकी पारिवारिक संपन्नता से होता है। संपन्नता एवं व्यावसायिकता की इस अंधी दौड़ में शिक्षा रूपी व्यवसाय तो जरूर फल-फूल रहा है पर शिक्षा का मूल उद्देश्य खत्म होता गया। इन संस्थाओं में नैतिक मूल्य धर्म चरित्र एवं व्यवहार में गिरावट देखी जा सकती है।

हमारी मनोवृत्ति का निर्माण हमारे जीवन, हमारे आचरण के अनुरूप ही होता है। हमारे जीवन तथा आचरण की मूल आधार है-हमारी शिक्षा। किसी भी देश का विकास उस देश की शिक्षा प्रणाली पर निर्भर होता है, क्योंकि देश की उन्नति के लिए हर व्यक्ति जिम्मेदार है और जो अपने ज्ञान संस्कार और अच्छे आचरण के जरिये देश को बुलंदियों पर पहुंचा सकता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वास्तव में दोष युक्त हो गई है।

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली को परतंत्र काल की शिक्षा प्रणाली माना जाता है। यह ब्रिटिश शासन की देन मानी जाती है। इस प्रणाली को लार्ड मैकाले ने जन्म दिया था। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का समान स्तर था, परन्तु वर्तमान में ऐसा नहीं है। शिक्षा में भी भेदभाव होने लगा, आर्थिक स्तर का भेदभाव होने लगा, शिक्षा का व्यवसायीकरण होने लगा, शिक्षा का राजनीतिकरण भी होने लगा। आज की शिक्षा में न तो समान अवसर मिलते हैं, न समान स्तर होता है। आज के समय में शिक्षा का स्तर शिक्षा विकास राजनीति के घेरे में है। ऐसे में शिक्षा का स्तर कैसे सुधारा जाए यह विचारणीय है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में ऐसी खामियां है, जिनके चलते शिक्षण संस्थाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। इनका सबसे बड़ा कारण शिक्षा का राजनीतिकरण है। आज देश में शिक्षा के सामान्यीकरण की आवश्यकता है|

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण होती है। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए; शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ, परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कहीं जा सकती। आधुनिक समय में योग्य शिक्षकों का अभाव है एवं अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है| योग्य शिक्षकों द्वारा किए गए कार्यों का प्रचार प्रसार होना चाहिए| वहीं उनकी लिखी हुई कृतियों को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए| इसी तथ्य को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने बाँदा जनपद के प्रसिद्ध **कवि केशव तिवारी** जी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान विषय पर लघु शोध करने का निर्णय किया।

1.5 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य के लिए जिस समस्या का चयन किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है-

“केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन"

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन का निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल, सुगम व सुव्यवस्थित हो जाता है। इस शोध के अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है-

- केशव तिवारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन
- केशव तिवारी के साहित्य सर्जना का अध्ययन करना
- केशव तिवारी की चयनित कविताओं में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना
- अध्ययन की उपादेयता चिह्नित करना

1.7 अध्ययन विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारू रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया है, जिसका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध के अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसंधान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.7.1 वर्णानात्मक अध्ययन विधि

शिक्षा तथा मनोविज्ञान संबंधी अनुसन्धान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का सबसे अधिक महत्त्व है, और यह व्यापक रूप से व्यवहार में आया है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार- "वर्णनात्मक अनुसन्धान क्या है" का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रही है, प्रक्रियाएँ जो चल रहीं हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा जो नयी दिशाएं विकसित हो रहीं हैं, उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।

वास्तव में किसी समस्या के समाधान में आगे बढ़ने से पूर्व व्यक्ति को उस विषय से परिचित होना आवश्यक है, जिसके क्षेत्र में वह कार्य कर रहा है। अतः अन्य विज्ञानों के समान ही शिक्षात्मक अनुसन्धान में भी प्रारंभ में किसी घटना विवरण अथवा विषय के सम्बन्ध को स्पष्ट करने पर विशेष ध्यान था। छात्रों, विद्यालयों, प्रशासन, पाठ्यक्रम अथवा किसी विषय के शिक्षण संबंधी समस्या के समाधान से पूर्व अनुसंधानकर्ता के मन में यह प्रश्न उठता है कि वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना मूल उद्देश्य होता है। वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता का सम्बन्ध केवल तथ्यों को एकत्र करने मात्र से नहीं है, अपितु एक कुशल अनुसंधानकर्ता का लक्ष्य तो विभिन्न चरों में संबंध ढूंढना एवं भविष्यवाणी करना होता है।

1.7.2 केस अध्ययन विधि

इसके अंतर्गत शोधकर्ता किसी सामाजिक इकाई एक व्यक्ति, परिवार, समूह, सामाजिक संस्था अथवा समुदाय का गहन अध्ययन करता है। वह उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली भूतकालीन घटनाओं अथवा अनुभूतियाँ, वर्तमान स्थिति एवं वातावरण के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्र करता है। इन तत्वों के सम्बन्धों का विश्लेषण करने के पश्चात् वह उस इकाई की स्थिति का चित्रण करता है। केस स्टडी विधि में एक व्यक्ति, समूह, संस्था एवं समुदाय का गहन अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा के क्षेत्र में केस अध्ययन विधि का प्रयोग आरम्भ से ही किया जा रहा है। सामाजिक शोध में केस अध्ययन विधि का प्रयोग सबसे पहले फ्रेड्रिक ली के द्वारा 1840 ई. में पारिवारिक बजट के अध्ययन में किया गया। इसी अर्थ में पी० वी० यंग ने केस अध्ययन विधि इस प्रकार परिभाषित किया है। "केस अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा सामाजिक इकाई के जीवनी का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जा सकता है।"

1.8 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

केशव तिवारी हिन्दी जनवादी कवियों में से एक है, उनकी कविताएँ किसानों और मजदूरों के जीवन पर आधारित हैं| वे देश के हर मजदूर, किसान को देश के मुख्य धारा में लाने के लिये प्रयासरत रहे। शिक्षा के क्षेत्र में भी यही लक्ष्य लेकर चला जाता है| उनकी कविताओं के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि शिक्षा अभी तक जिन लोगो तक नहीं पहुंचीं है, उनको भी शिक्षित किया जाए और उनको भी मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया जाए।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

2.3 समीक्षा

2.4- निष्कर्ष

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसन्धान साहित्य की संज्ञा दी जाती है| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोष, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धान कर्ता का अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया, उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्त्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

अनुसन्धान कार्य में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्त्व स्वयं सिद्ध हैं। अनुसन्धान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसन्धान कर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है। साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसन्धान कर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? किस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक, मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसन्धान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है| अनुसन्धान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्त्व के बारे में विद्वानों ने अपने- अपने से विचार व्यक्त किए हैं।

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार "व्यवहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों, प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करना पड़ता है, से भिन्न मान पूर्व में संग्रहित व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को सम्भव बनाते हैं।"

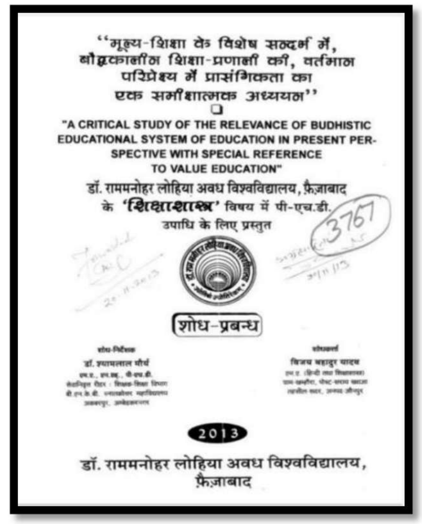
किसी भी अनुसन्धान कार्य को उचित रूप से सम्पादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसन्धान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसन्धान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है। सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है-

- ❖ किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं, जिनके महत्त्व को पूर्व में प्रमाणित किया जा चुका है।
- ❖ पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है।
- ❖ किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है।
- ❖ लिए गए अनुसन्धान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा, कौन से उपकरण उचित होंगे, किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है।
- ❖ लिए गए अनुसन्धान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है।
- ❖ समस्या के समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है।

❖ यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य

विजय बहादुर यादव (2013) ने मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान परिपेक्ष में प्रसंगिकता का एक समीक्षात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि—



"मूल्य-शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में, बौद्धकालीन शिक्षा-प्रणाली की, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का एक समीक्षात्मक अध्ययन"

"A CRITICAL STUDY OF THE RELEVANCE OF BUDHISTIC EDUCATIONAL SYSTEM OF EDUCATION IN PRESENT PER-SPECTIVE WITH SPECIAL REFERENCE TO VALUE EDUCATION"

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फ़ैज़ाबाद के 'शिक्षाशास्त्र' विषय में पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोध-निर्देशक
डॉ. श्यामलाल मौर्य

शोधकर्ता
विजय बहादुर यादव

2013

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फ़ैज़ाबाद

- वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली तत्कालीन राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन से जुड़ गई थी तथापि इस शिक्षा व्यवस्था पर धीरे-धीरे धर्म का प्रभाव अत्यधिक हावी होने लगा था। शिक्षा में कर्मकाण्ड बढ़ने लगा था।
- वैदिक काल में ज्ञान-प्राप्ति का मुख्य आधार तप एवं ध्यान था तथा शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास को अग्रसर करना था, परन्तु उत्तर वैदिक काल में धीरे-धीरे यज्ञ, हवन आदि पर अधिक बल दिया जाने लगा। उस समय यह महसूस किया गया कि यज्ञ, हवन आदि धार्मिक संस्कारों को ठीक प्रकार से सम्पन्न कराने के लिये इनकी विस्तृत विधि का शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। इसके फलस्वरूप पुरोहितवाद का उदय हुआ तथा शिक्षा पर ब्राह्मणों का एकाधिकार हो गया।
- शिक्षा को कर्मकाण्ड से जोड़ दिया गया। फलस्वरूप शूद्रों तथा नारी जाति की शिक्षा उपेक्षणीय हो गई थी। जन साधारण परेशान था। ऐसी परिस्थिति में आज से लगभग 2500 ई. पूर्व गौतम बुद्ध (563-483 बी. सी.) ने बौद्ध धर्म की स्थापना की थी।
- बौद्ध धर्म को व्यापक हिन्दू धर्म का ही एक विकसित रूप माना जा सकता है। वास्तव में बुद्ध के समय से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व से ही भारतीय विचारों में आन्दोलन होने लगे थे तथा इन्हीं आन्दोलनों ने ही बुद्ध धर्म के लिए, एक उपयुक्त वातावरण तैयार कर दिया था। अतः कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म भारतीय जीवन के आंगिक विकास का परिणाम था न कि कोई वाह्य दृष्टि का परिणाम। बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार के लिये बौद्ध मठों तथा बिहारों की स्थापना की गई थी।
- प्रारम्भ में इन मठों तथा विहारों का एक मात्र उद्देश्य बौद्धों को धर्म की शिक्षा प्रदान करना था, परन्तु कालान्तर में सभी धर्मों के छात्रों को इन मठों या विहारों में शिक्षा दी जाने लगी थी। बौद्धकालीन शिक्षा काफी सीमा तक वैदिक शिक्षा के समान ही थी। जिस प्रकार से यज्ञ वैदिक काल में ज्ञान तथा शिक्षा के केन्द्र बिन्दु थे, ठीक उसी प्रकार से बौद्ध संघाराम बुद्धकाल में शिक्षा व विद्या के केन्द्र बिन्दु थे।

मधु कुमारी वर्मा (2017) ने बौद्ध धर्म के शैक्षिक चिंतन एवं नैतिक मूल्यों का वर्तमान परिपेक्ष में प्रसंगिकता का एक अध्ययन किया जिसमें इन्होंने पाया कि —



"बौद्ध धर्म के शैक्षिक चिंतन एवं नैतिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता — एक अध्ययन"

शोध प्रबन्ध
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
की पी.एच.डी.
की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शिक्षा संकाय

शोधार्थी
मधु कुमारी वर्मा

शोध पर्यवेक्षक
प्रो. सुषमा सिंह (प्राचार्य)
जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
सकतपुरा, कोटा
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)
2017

- बौद्ध दर्शन की शैक्षिक विचारधारा एवं नैतिक मूल्य तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता स्पष्टतः परिलक्षित होती है। बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य वस्तुतः व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करना था, परन्तु

बौद्ध शिक्षा में शारीरिक विकास की उपेक्षा नहीं की गयी थी| उद्देश्यानुरूप ही पाठ्यक्रम की व्यवस्था थी।

- आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लौकिक विषयों को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया था। धर्म तथा दर्शन के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता था। बौद्ध शिक्षा केन्द्रों में बौद्ध शिक्षा दर्शन के अतिरिक्त अन्य दर्शनों का भी अध्ययन कराया जाता था। अन्य दर्शनों की गूढ़ एवं सत्य तथ्य बौद्ध दर्शन में स्वीकार किए जाते थे। भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों के लिए नियम तथा आचार संहिता थे, जिनका पालन अनिवार्य था। जहां एक ओर प्रतिभाशाली तथा बुद्धिमान छात्रों के लिए विशेष ध्यान दिया जाता था तथा मन्द बुद्धि छात्रों के लिए पृथक शिक्षण व्यवस्था थी तथा पृथक-पृथक विधियों का प्रयोग किया जाता था ।
- छात्र-आचार्य सम्बन्ध व्यवहारिक तथा मधुर थे। छात्र अपना कर्तव्यपालन करते थे, वहीं आचार्य भी अपने उत्तरदायित्वों का पूर्ण निर्वाह करते थे। वैदिक शिक्षा की भांति बौद्ध शिक्षा में भी शास्त्रार्थ तथा अनुसंधान को महत्त्व दिया जाता था। कतिपय छात्र ज्ञान प्राप्ति हेतु अपना पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर देते थे| स्त्रियों के लिए पृथक विद्यालयों का उल्लेख कही भी नहीं प्राप्त होता हैं अतएव कहा जा सकता है कि सह-शिक्षा की व्यवस्था थी। स्त्रियों को भी पुरूषों की ही भांति समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाती थी।
- शिक्षा प्रदान करने में वर्ण व्यवस्था का कोई महत्त्व नहीं था योग्य छात्र किसी भी वर्ग से सम्बद्ध थे, उन्हें निष्पक्षता से शिक्षा प्रदान की जाती थी।

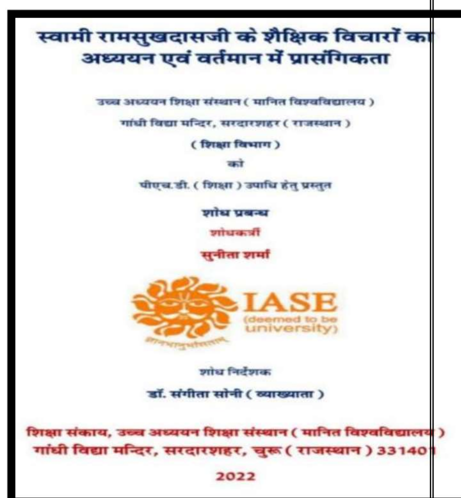
राजेश कुमार (1998) ने ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का स्वरूप का अध्ययन चंदौली जिले के माधवपुर ग्राम के उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया। जिसमें इन्होंने पाया कि —


ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक एवम् आर्थिक पृष्टभूमि का स्वरूप
(चन्दौली जिले के माधोपुर ग्राम के उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)
एम० ए०, अन्तिम वर्ष (समाजशास्त्र) की परीक्षा में वैकल्पिक प्रश्न-पत्र औद्योगिक समाजशास्त्र के स्थान पर प्रस्तुत
लघु शोध-प्रबन्ध
डा० पी० एम० यादव
राजेश कुमार
जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जगतपुर, वाराणसी
1998

- विद्यार्थी का पारिवारिक एवं आर्थिक पार्श्वपृष्ठ पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश (60 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप एकाकी है, जबकि संयुक्त स्वरूप वाले परिवार कम उत्तरदाता एकाकी स्वरूप वाले परिवार की तुलना में काफी कम (40 प्रतिशत) हैं।
- गाँव के उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी अधिकांश (32 प्रतिशत) मध्यम आय वर्ग अथवा उच्च आय वर्ग के हैं, निम्न आय वर्ग के विद्यार्थी बहुत कम हैं| अतः स्पष्ट है कि उनकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है।
- माता-पिता के शिक्षा पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की माताएं बहुत अधिक (30 प्रतिशत) निरक्षर हैं और जो साक्षर हैं भी वे बहुत निम्न स्तर की शिक्षा प्राप्त है, जबकि पिता उनकी माताओं की तुलना में अधिक साक्षर हैं, परन्तु उनमें शिक्षा का स्तर मध्यम ही है। उच्च शिक्षा प्राप्त माता-पिता बहुत ही कम है। अधिकांश (44 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार में एक या दो व्यक्ति ही कमाने वाले हैं| तीन या उससे अधिक व्यक्ति कमाने वाले परिवारों की संख्या बहुत कम है| कमाने वालों में स्त्रियों पुरुषों की तुलना में बहुत कम है।
- 50 विद्यार्थी के परिवार में खुद 285 शिक्षित लोग हैं, जिनमें 110 स्त्री एवं 175 रोजगार प्राप्त लोगों की संख्या मात्र 66 हैं, जिनमें 10 स्त्री एवं 50 पुरूष हैं।

- विद्यार्थी की शिक्षा से जुड़े तथ्यों के अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों में अधिकांश (74 प्रतिशत) को किसी प्रकार की शिक्षा सम्बन्धी परेशानी नहीं है, कुछ को सामाजिक (4 प्रतिशत) आर्थिक (10 प्रतिशत) पारिवारिक (8 प्रतिशत) अथवा शारीरिक (27 प्रतिशत) परेशानी है, जो बहुत ही अल्प मात्रा में है। अधिकांश (48 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की उनके पिता ही उनका सहयोग करते हैं। लगभग एक चौथाई को किसी का भी सहयोग प्राप्त नहीं है, जबकि माता, भाई, पड़ोसी, रिश्तेदार का सहयोग प्राप्त करने वाले बहुत ही कम हैं।
- अध्ययन के लिए आने वाले अधिकांश (54 प्रतिशत) विद्यार्थी बहुत दूर से और बिना साधन के ही आते हैं, कुछ साइकिल से और एकाध मोटर साइकिल अथवा अन्य किसी साधन से आते हैं, शिक्षा के लिए लगभग तीन चौथाई से ज्यादा अपने पिता पर ही निर्भर हैं।

सुनीता शर्मा (2022) ने स्वामी रामसुखदास जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि—


स्वामी रामसुखदासजी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (राजस्थान)
(शिक्षा विभाग)
को
पीएच.डी. (शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध
शोधकर्ता
सुनीता शर्मा
IASE (deemed to be university)
शोध निर्देशक
डॉ. संगीता सोनी (व्याख्याता)
शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, चूरू (राजस्थान) 331401
2022

- शिक्षक को सदैव अपने छात्रों को सीख देने के लिए तत्पर होना चाहिए। शिक्षक का महत्त्व, उसका स्थान प्रमुख है| छात्रों को शिक्षित, चरित्रवान, जीविकोपार्जन हेतु तैयार करना शिक्षक का कार्य होना चाहिए। समाज को एक दिशा प्रदान करने का कार्य स्वामी रामसुखदासजी ने किया स्वामी रामसुखदासजी स्वयं सम्पूर्ण जीवन में विद्यार्थी ही बने रहे और सदैव सीखने को तत्पर रहे।
- स्वामी रामसुखदास जी एक बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे| वे स्वयं अपने आप में एक दिव्य ज्योति थे| साथ ही वे सरल मनुष्य थे, जिनमें सभी विशेषताएँ तथा गुण थे; जो एक महान व्यक्ति में होते हैं। स्वामी रामसुखदास जी ने हमेशा युवा वर्ग को प्रेरित किया। उनके अनुसार युवा वर्ग ही इस धरा पर उपलब्ध वे प्रबल संसाधन है, जो यदि दृढ़ संकल्प कर ले तो शीघ्र ही सुन्दर रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।
- स्वामी रामसुखदास जी के विचारों से विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है। उनके अनुसार परिश्रम से ही सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचा जा सकता है| स्वामी रामसुखदास जी हमेशा लोगों उनकी समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करते थे। स्वामी रामसुखदास जी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं अत्यधिक विकास की प्रक्रिया है। स्वामी रामसुखदासजी ने अपने शैक्षिक विचारों के अनुसार शिक्षा ज्ञान और बुद्धि के रास्ते से गुजरने वाली अनन्त यात्रा है, जिसके द्वारा ईर्ष्या, कलह, घृणा से रहित मानवता के विकास के दरवाजे खुलने लगते है।

दयाशंकर दुबे (1991-92) ने शिक्षा शास्त्री के रूप में जॉन डीवी और महात्मा गाँधी का एक तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान भारत में शिक्षा हेतु उनकी संगति का अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि कि—

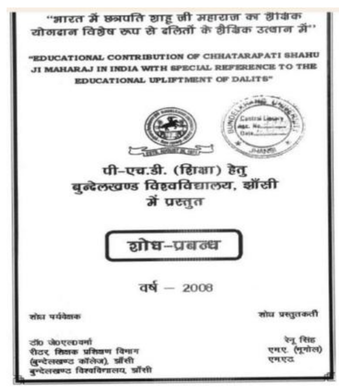


- जॉन डिवी की दार्शनिक कृतियों के निर्माण काल में उनके विचारों को पीडारविन टी०एच०हक्सले और ऑगस्ट कॉमटे की कृतियों ने उत्प्रेरित किया था। जॉन डिवी की दर्शन में रूचि उनके अध्यापक टॉरी के तप से उत्पन्न हुई थी| हेरिस और जार्ज सिलवेस्टर मारिस के सम्पर्क एवं प्रभाव में आने के कारण जॉन

डिवी नये हीगेल वादी बन गये| जी०स्टेनले हाल से प्रेरणा प्राप्त करके जॉन डिवी ने नये मन में रूचि लेना आरम्भ कर दिया और अपने आदर्शवाद को मनो- विज्ञान से सम्बन्धित करने का प्रयत्न करने लगे ।

- सन् 1890 तक जाने डिग्री एक हिलियन साधनवादी हो गये थे। दर्शन और मनोविज्ञान के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने और तदनुकूल अपनी स्थिति को सन्तुलित करने में उन्हें कठिनाई का अनुय हो रहा था, क्योंकि सन् 1890 तक उनके विचारों में साधनवादी मध्य होने वाले संघर्ष से दर्शन की उत्पत्ति हुई है।
- जॉन डिवी के अनुसार दर्शन का एक मात्र उद्देश्य मानव की सर्वाधिक व्यवस्थित एवं बौद्धिक प्रसन्नता प्राप्त करना है। जॉन डिवी के लिए दर्शन अपने लक्ष्य में व्यवहारिक है वह सैद्धान्तिक नहीं है । हमने खोजा है कि जॉन डिवी समस्त प्रकार के द्वैत का विरोध करते हैं| चाहे वह द्वैत मन व पदार्थ के मध्य का हो और सत्य व आदर्श के मध्य ही क्यों न हो। साधनवादी दर्शन समस्त वस्तुओं को परिवर्तनशील मानता है। यहाँ तक कि मूल्य भी स्थिर न हैं, वे भी परिवर्तित परिस्थितियों द्वारा सुधार के आधीन हैं।

रेनू सिंह (2008) ने भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान का अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि—


"भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में"

"EDUCATIONAL CONTRIBUTION OF CHHATARAPATI SHAHU JI MAHARAJ IN INDIA WITH SPECIAL REFERENCE TO THE EDUCATIONAL UPLIFTMENT OF DALITS"

पी-एच.डी. (शिक्षा) हेतु
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
में प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

वर्ष – 2008

शोध पर्यवेक्षक
डॉ० जे०एल०वर्मा
रीडर शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
(बुन्देलखण्ड कॉलेज), झाँसी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोध प्रस्तुतकर्ती
रेनू सिंह
एम.ए. (भूगोल)
एम.एड.

- छत्रपति शाहू जी महाराज के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं के प्रति भली भाँति जागरूक थे| इसलिये उन्होंने जीवन के कटु सत्यों की उपेक्षा नहीं की शिक्षा के द्वारा बुद्धि मस्तिष्क शरीर आत्मा के साथ ही हाथों का प्रशिक्षण करने के पक्ष में भी थे।
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुर्ननिर्माण की तीव्र अभिलाषा छत्रपति शाहू जी के शैक्षिक विचारों की विशेषता है ये लोग व्यक्ति की असीमित शक्ति में विश्वास करते थे और उस शक्ति का ज्ञान वे शिक्षा के माध्यम से देना चाहते थे।
- शिक्षा के द्वारा ही इन्होनें उच्च विचारों का प्रचार एवं प्रसार करना चाहा। इनका विश्वास था कि.. वास्तविक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव है। छत्रपति शाहू जी महाराज ने शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकतावाद एवं आध्यात्मवाद से सम्बन्धित बताया है। भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में इस प्रकार का तालमेल बैठाकर और शिक्षा का सही-सही उद्देश्य निर्धारित कर आधुनिक शिक्षा को नयी दिशा प्रदान की। इससे स्पष्ट है कि इस महापुरुष के शैक्षिक उद्देश्य आधुनिक शिक्षा के लिये प्रासंगिक है।
- कोल्हापुर नरेश श्री छत्रपति शाहू जी महाराज ने पुस्तकीय शिक्षा का समर्थन न करते हुए देश की आधारभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित पाठ्यक्रम का निर्धारण किया। आधुनिक शिक्षा में यदि इन महापुरूषों के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को महत्त्व दिया जाए, तो अवश्य ही शिक्षा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी।
- किसी भी शोध कार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए कि उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हो प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं-
- समाज में असमानता न रहे जाति भेद, ऊँच-नीच का व्यवहार में समाप्त हो।

- प्राइमरी स्कूलों हाईस्कूलों और कॉलेजों के छात्रों में जातियों के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव न बरता जाए|
- सरकारी विभागों में कार्य कर रहे दलित जाति के कर्मचारियों के साथ शालीनता का व्यवहार करें तथा उनके साथ छुआछूत का भाव न रखें।

अन्त में हम कह सकतें है कि सभी वर्गों के लिये शिक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिये शिक्षा ही ज्ञान का आदि स्त्रोत है और ज्ञान ही शक्ति और समृद्धि का मूलाधार है। जिस देश में शिक्षा का अभाव है, उस देश का शासन पंगु होता है| वस्तुतः शासन का मुख्य आधार ही शिक्षा है।

अर्चना गुप्ता (1990) ने महात्मा गाँधी एवं विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का नवीन शिक्षा नीति के परिपेक्ष में आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि —



महात्मा गाँधी एवं विनोबा
के शैक्षिक विचारों का नवीन शिक्षा नीति
के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक एवं
अध्यय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
की
शिक्षा शास्त्र विषय
की
डॉक्टर ऑफ
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध - प्रबन्ध

1999

निर्देशक:-
डॉ. जे. एल. वर्मा
रीडर,
शिक्षा विभाग

शोधकर्ती :-
कु. अर्चना गुप्ता

- महात्मा गाँधी जी एवं विनोबा भावे दोनो ही उच्च श्रेणी के शिक्षाविदों से आते हैं, क्योंकि दोनो ही विद्वानों ने देश की सम्पूर्ण समस्याओं को समझा है तथा इस समस्या से निबटने के लिये नये-नये आयाम प्रस्तुत किये हैं| शिक्षा के क्षेत्र में भी गाँधी जी केवल साक्षरता को ही शिक्षा नहीं मानते थे, क्योंकि साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ जिसके द्वारा मनुष्य को शिक्षित किया जा सके। उनका विचार था कि शिक्षा के द्वारा मनुष्य के शरीर मन, हृदय और आत्मा का विकास करना चाहिये।
- गाँधी जी किताबी शिक्षा को शिक्षा न मानकर व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर महत्त्व देते थे। यह बालक को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर देते थे। जिससे वह अपना तथा समाज का विकास कर सके।
- विनोबा जी भी व्यक्ति को कर्मशील तथा समाज उन्नत बनाने में विश्वास करते थे, जिससे वह इस समाज तथा राष्ट्र का हित करें। जहाँ तक जीवन के लक्ष्य का सम्बन्ध है, उससे यह ज्ञात होता है कि विनोबा तथा गाँधी जी के दर्शन में समानता है। गाँधी जी का कार्य भारत की स्वतंत्रता का था| विनोबा जी का कार्य सामाजिक पुनरुत्थान का था, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में भी दोनो शिक्षाशास्त्रियों की विचारधारा लगभग समान ही है; क्योंकि दोनों शिक्षाविदों के रास्ते भले ही (शिक्षा विचार) अलग हो पर मंजिल एक ही थी, यानि बालकों का सर्वागीण विकास करना था।
- शिक्षकों को उनके दायित्वों के प्रति जागरूक किया जाए।
- छात्रों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जाए।
- शिक्षा के उद्देश्य को परिवर्तनशील भौतिक समाज के अनुरूप बनाया जाए।
- पाठ्यक्रम व्यवसायपरक हो।
- शिक्षण विधियों के क्षेत्र में व्यवहारिक एवं प्रायोगिकता पर अधिक बल दिया जाए।
- अनुशासन के क्षेत्र में स्वतंत्रता का समुचित प्रयोग किया जाए।

रवि कुमार (2018) ने सह- अस्तित्ववाद मध्यस्थ दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ का अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि—



"सह—अस्तित्ववाद (मध्यस्थ दर्शन) के शैक्षिक निहितार्थ"

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

शिक्षा संकाय

पी–एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोधकर्ता

रवि कुमार

IASE (deemed to be university)

शोध निर्देशक

डॉ. सरिता शर्मा, शोध निर्देशक

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

2018

- समकालीन शिक्षा दर्शनों की विचारधारा परस्पर विरोधी है। इसका प्रमाण है कि आदर्शवाद जिन भौतिक तत्वों और जगत का खंडन करता है और जिन प्राकृतिक और भौतिक तत्वों को अपनी विवेचना में शामिल नहीं करता, तो प्रकृतिवाद अपने दृष्टिकोण में आदर्शवाद कि आध्यत्मिकता को कोई स्थान नहीं देता और आदर्शवाद के दृष्टिकोण से वंचित प्राकृतिक और भौतिक तत्वों को ही अपनी विचारधारा का मुख्य आधार बनाता है।
- यथार्थवाद केवल भौतिक संसार को ही सत्य मानता है और अपने दृष्टिकोण में आध्यत्मिकता को कोई स्थान नहीं देता और अपनी मूल्य मीमांसा में सुख को ही सर्वोच्च मानता है, लेकिन क्या इंद्रियाँ सुख का अनुभव कर सकती है? यथार्थवाद वर्तमान व्यवहार को ही सत्य मानता है।
- यथार्थवाद की विचारधारा अतीत और भविष्य के व्यवहार को अपने दृष्टिकोण में कोई स्थान या महत्त्व नहीं देती, जबकि कोई भी विचार और दृष्टिकोण के निर्माण हेतु अतीत का ज्ञान, आधार का काम करता है और यदि वर्तमान व्यवहार सत्य है, तब वर्तमान व्यवहार पर आधारित भावी व्यवहार कैसे असत्य हो सकता है इस प्रशन का उत्तर यथार्थवाद के पास नहीं है।
- वर्तमान समय में किस समकालीन दर्शन की विचारधारा अत्यधिक उपयुक्त है। समकालीन दर्शन के अध्ययन उपरांत उपयुक्तता के विषय में परस्पर भ्रम उत्पन्न होता है। अनेक समकालीन दर्शनों की परस्पर विरोधी विचारधारा एक ही समय में एक ही विद्यार्थी को ज्ञान रूप में दी जा रही है। शिक्षण प्रणाली की यह प्रक्रिया शिक्षा के उस अर्थ को धूमिल कर रही है। जिसमें हम शिक्षा द्वारा मानव जीवन में आने वाली शंका और समस्याओं के समाधान का एक सही मार्ग प्रशस्त करने की बात करते हैं। प्रकृति में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति एवं इतिहास के आनुषंगिक मनुष्य, मनुष्य जीवन लक्ष्य, जीवन में समाधान तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।
- विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, शाला एवं शिक्षा मंदिरों की गुणात्मक एकता एवं एक सूत्रता को स्थापित करना।
- उन्नत मनोविज्ञान के संदर्भ में निरंतर शोध एवं अनुसंधान व्यवस्था को प्रस्थापित करना।
- प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखंड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठित करना।
- शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक की तारतम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार पर स्थापित करना।
- विगत वर्तमान एवं आगत पीढ़ी की परंपरा के प्रतीक स्तर तारतम्यता, एकसूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व कर्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।
- मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था संबंधी शिक्षा सर्वसुलभ बनाना।

अंकित कुमार (2022) ने **डॉ० गया प्रसाद सनेही का शैक्षिक योगदान का** अध्ययन किया जिसमें इन्होंने पाया कि—



- डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का मानना है। कि गुरुकुल में शिक्षकों, आचार्यों का कर्तव्य है कि बच्चे को ऐसी प्रेरणा, सुसंस्कार, सद्प्रशिक्षण एवं सीख दें। ताकि यह समाज एवं स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं विश्व के लिए सुन्दर गुलशन का निर्माण कर सके।
- शिक्षकों को चाहिए कि वे बिना भेदभाव के अपने शिष्यों को उन्नति, प्रगति, उसके अन्त में लिये दोष दुर्गणों का विरेचन कर और गणों का समावेश करें।
- विद्यार्थी को अपने कर्म के बल पर जीवन का निर्माण करना चाहिए। विद्यार्थी को विनम्र अनुशासित, नियमबद्ध और सक्रिय रहना चाहिए।
- शिक्षा में व्यक्ति को महत्त्व पूर्ण इकाई माना है, क्योंकि अगर व्यक्ति शिक्षित चरित्र और गुण वाला होगा तो समाज भी शिक्षित होगा।
- समन्वय शिक्षा अर्थात प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिकता के साथ विद्यार्थियों को करने का प्रयास कर रहा है।

अजीत कुमार (2022) ने केदार नाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया जिसमें इन्होंने पाया कि—



- किसी भी शोध अध्ययन के निष्कर्षो की सार्थकता उसके शैक्षिक उपादेयता पर निर्भर है। शैक्षिक निहितार्थ न होने पर शोध कार्य की कोई उपायोगिता सिद्ध नहीं होती है, जिससे अमूल्य समय एवं धन की हानि ही नहीं होती, बल्कि राष्ट्र को भी उसका लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं-
- जिस प्रकार केदारनाथ अग्रवाल ने ग्रमीण परिवेश में अपना जीवन व्यातीत करते हुए ग्रमीण जीवन को अनुभूत किया, उसी प्रकार हमें भी अपने परिवेश को गहराई से समझकर अपने जीवन में आत्मसात कर उसको अपने भावी जीवन में उपयोग कर सार्थक बनाना चाहिए।
- जिस प्रकार केदार जी अपने समकलीन प्रतिष्ठित कवियों से परिचय व मित्रता होने से उनके काव्य सृजन में निखार आया, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में अच्छे मित्र बनाना चाहिए।
- जिस प्रकार कवि केदारनाथ अग्रवाल वकालत करते हुए आर्थिक लाभ न होने के कारण रोजी-रोटी हेतु रुचि पूर्वक लेखन को दृढ़ता से अपनाया, उसी प्रकार हमें भी जीवन में किसी क्षेत्र विशेष में ऊंचाई पर पहुचना चाहिए। ताकि भाविष्य में उसको आपदा के समय जीवन मापन के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किए गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया, जिसमें—मूल्य-शिक्षा के विशेष संदर्भ में, बौद्ध कालीन शिक्षा- प्रणाली, बौद्ध धर्म के शैक्षिक चिंतन एवं नैतिक मूल्य, डॉ० गया प्रसाद सनेही का शैक्षिक योगदान, ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का स्वरूप, स्वामी रामसुखदास जी के शैक्षिक विचार, शिक्षा शास्त्री के रूप में जॉन डीवी और महात्मा गांधी का एक तुलनात्मक अध्ययन, भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का शैक्षिक योगदान, महात्मा गांधी एवं विनोबा के शैक्षिक विचार, सह-अस्तित्व (मध्यस्थ दर्शन) के शैक्षिक निहितार्थ, केदार नाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यो का अध्ययन किया गया है|

संबंधित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्ता को प्रस्तुत समस्या "केशव तिवारी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान" से संबंधित अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला। केशव तिवारी का शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

केशव तिवारी: व्यक्तित्व एवम् कृतित्व

3.1 बाल्य जीवन

3.2 अध्ययन यात्रा

3.3 जीविका

3.4 गृहस्थ जीवन

3.5 केशव तिवारी का रचनाकर्म

3.6 पुरस्कार

तृतीय अध्याय

केशव तिवारी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 बाल्य जीवन



कवि केशव तिवारी का जन्म 4 नवम्बर, 1963 को कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वितीया दिन सोमवार को ग्राम-पूरेदला, जेठवारा जिला-प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ था| जो उनका ननिहाल था, जबकि उनका पैतृक गाँव जोखू का पुरवा, प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में है| केशव तिवारी जी का सौभाग्य यह रहा कि उन्हें अपने ननिहाल और पितृ पक्ष दोनों जगह भरपूर प्यार, दुलार और अपनापा मिला| उनकी माता श्रीमती चमेली देवी और पिता श्रीराम नागेश तिवारी थे| केशव तिवारी का बचपन अपने ननिहाल में बीता| उनके नाना अर्ध-सामन्ती प्रवृत्ति के थे| वे अपनी नानी से ज्यादा प्रभावित रहे| उसका कारण यह है कि नानी खेतों में काम करने वाले मज़दूरों के प्रति बड़ी सहृदयता रखती थीं| उनके दुःख-सुख के बारे में जानकारी पूछती रहती थीं। केशव तिवारी बताते हैं कि चूँकि मैं सबसे बड़ा नाती था, मेरी माँ वहाँ सबसे बड़ी थी, इसलिए वहाँ रहने के कारण मेरा जीवन मजदूरों से ज्यादा घुला-मिला रहा। मजदूरों के कन्धे पर बैठ कर मैं घूमा करता था| कभी-कभी काम करने वाली महिलाएँ भी कभी मुझे अपने साथ ले जाती थीं और वहाँ मैं खेत की मेड पर बैठा रहता था। केशव तिवारी की काव्य यात्रा में जो जन-जीवन के सरोकार देखने को मिलते हैं, मजदूरों, कामगारों और किसानी के जो अंश उनकी कविता यात्रा में देखने को मिलते हैं, उनके बीज बचपन में ही बोये गए थे| जिनका प्रतिफलन आज हिन्दी समाज को मिला रहा है|

3.2 अध्ययन यात्रा



केशव तिवारी ने प्रारम्भिक शिक्षा तो अपने नाना के यहाँ बहेरीपुर में प्राप्त की। उनके पिता भारतीय रेल विभाग में इंजीनियर पद पर कार्यरत थे| जब वे 5, 6 साल के थे, तो उनका तबादला जबलपुर हो गया और वे अपनी माँ के साथ जबलपुर चले गए| वहाँ एक इंग्लिस मिडियम स्कूल में (सिटी मंटेशरी) शुरुआती पढ़ाई की। फिर पिता का ट्रांसफर सतना हो गया, तो फिर सतना में रहकर पढ़ाई की और स्नातक की शिक्षा अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) में की| इसके बाद उन्होंने अपना रुख इलाहबाद की ओर किया और वहाँ सिविल सेवा की तैयारी में लग गए| लेकिन वहाँ उनका मन नहीं लगा और वे मैनेजमेंट की पढ़ाई करने के लिए बाम्बे के डाबर कॉलेज चले गये| इसी दौरान उनका जुड़ाव मार्क्सवाद से हुआ| जिसने चीजों को नये नजरिये से देखने का अलग दृष्टिकोण विकसित हुआ|

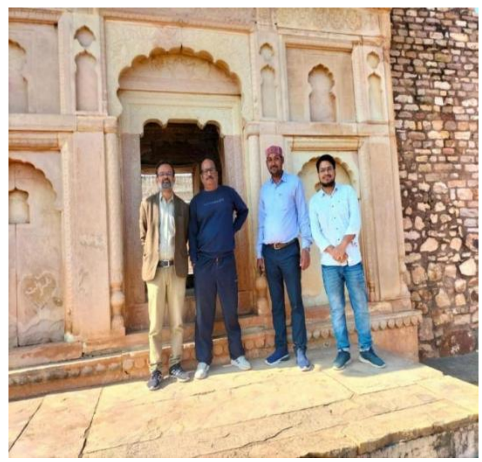
3.3 जीविका

केशव तिवारी मनमौजी और मस्तमौला स्वभाव के मनुष्य हैं| वे किसी बन्धन या दबाव में आने वाले लोगों में से नहीं हैं| वे नदी की धार की तरह अपनी राह बनाते हुए आगे बढ़ते हैं| नतीजतन बार-बार नौकरी बदलते रहे| इस तरह लगभग 15, 16 जगह नौकरियाँ बदलीं| उस ज़माने में नौकरी आसानी से मिल जाया करती थी| वह आज की तरह का भयावह बेरोजगारी का दौर नहीं था| अंततः हिन्दुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड में स्थायी तौर पर 1986 में काम करना शुरू किया और उनकी



कर्मभूमि बनी बुन्देलखण्ड| जिसने उन्हें बड़ी शिद्दत से चाहा| केशव तिवारी ने भी बुन्देलखण्ड को अपनी आत्मा में बसा लिया| कोई बुन्देलखंडी भी यहाँ के बारे में इतना न जानता होगा, जितना केशव जी जानते हैं|

उन्होंने यहाँ का चप्पा-चप्पा घूमा-देखा| पाठा के जंगलों से लेकर महोबा की ठाठ और कालिंजर के किले और बाँदा की केन नदी तो उनके लिए घर आँगन की तरह है| जब भी उनका मन उदास हुआ, इन दोनों जगहों ने उसे बाग-बाग कर दिया| उदासी का भी अपना सच होता है, कालिंजर और केन नदी मनुष्य को उदासी के पार एक नयी दुनिया बनाती हैं| बाँदा ने उनका मन ऐसा मोह लिया कि वे बस यहीं के हो गए| लेकिन इस सब के बीच वे अपनी कर्मभूमि अवध को नहीं भूले| उनकी कविता में अवध और बुन्देलखण्ड की आवाजाही ऐसी बन पड़ी है कि इस भूमि का बेरहम सच उनकी कविता में देखा जा सकता है| जैसा कि आमतौर पर होता है कि लोग नौकरी पेशा हिने के बाद गाँव से कट जाते हैं, लेकिन केशव जी इस मामले में विरल व्यक्तित्व हैं| वे कहीं भी रहे, लेकिन गाँव से नाता बनाये रखा| उस परम्परा से



लगाव उनकी कविताओं में भी झलकता है| वे कहते हैं कि मुझे पता नहीं क्यों ये बराबर मेरे दिमाग में बना रहा कि मेरा जो कुछ भी मैं बना, जो कुछ भी मेरा मन बना या मुझे जो भी सकरात्मक नकारात्मक जो मिला ज्यादातर वही से मिला।

3.4 गृहस्थ जीवन

केशव तिवारी का विवाह 21 वर्ष की उम्र में मंजुला तिवारी से कुंडा, प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश के एक सम्भ्रांत परिवार में हुआ| उनके दो बेटियाँ और एक बेटा है| बड़ी बेटी नेहा तिवारी, छोटी सोनाली तिवारी और बेटा अभिषेक तिवारी है। जो अपने-अपने कार्यक्षेत्र में लगे हुए हैं| 28 वर्ष की उम्र उनके सर से माता-पिता का साया उठ गया|

3.5 केशव तिवारी का रचनाकर्म

केशव तिवारी के अब तक कुल तीन कविता संग्रह प्रकाशित हैं| सन 2005 में उनका पहला कविता संग्रह 'इस मिट्टी से बना', रामकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित हुआ| जिसकी भूमिका में कवि विजेन्द्र लिखते हैं-"केशव तिवारी की कविताएँ अपनी जातीयता की जड़ों से फूटती है| देशज शब्द अंकुरित होते हैं| अतः उनकी काव्य भाषा में ठेठ हिन्दी का मुहावरा रचा जान पड़ता है| उनकी भाषा ने अवधी और बुन्देलखंडी से बराबर ताकत हासिल की है| कविता में जनपदीय चेतना को भारतीय कविता की बड़ी लम्बी परम्परा है| यही लोकधर्मिता है जिसे निराला, नागार्जुन, केदारबाबू और त्रिलोचन विकसित करते रहे हैं| 'आसान नहीं विदा कहना' केशव तिवारी का दूसरा कविता संग्रह है, जो रायल पब्लिकेशन, जोधपुर से प्रकाशित हुआ| केशव तिवारी का तीसरा कविता संग्रह 'तो काहे का मैं' साहित्य भण्डार, इलाहबाद से 2014 में प्रकाशित हुआ|

3.6 पुरस्कार

पुरस्कार किसी लेखक के लिए उपलब्धि अवश्य है, लेकिन वह कवि की श्रेष्ठता का पैमाना नहीं हो सकता| मौजूदा दौर में केशव तिवारी की कविताओं की जिस तरह से जन स्वीकृति मिली है, वह किसी पुरस्कार से कम नहीं है| उन्हें छत्तीसगढ़ के जगदलपुर जनपद से प्रकाशित 'समकालीन सूत्र' पत्रिका द्वारा 'सूत्र सम्मान' से सम्मानित किया गया| इसके अलावा कोलकाता की प्रतिष्ठित संस्था ने 'अनुनाद पुरस्कार' से सम्मानित किया है| जिसकी सम्पूर्ण धनराशि उन्होंने महेश पुनेठा जी को बच्चों की शिक्षा के लिए काम करने वाली संस्था के लिए दे दिया | यह केशव तिवारी जी की उदारता का बेमिसाल नमूना है, जो यह साबित करता है कि कवि के जिन सवालों को रचना में उठाता है, निजी जीवन में भी उनके अलग नहीं है|

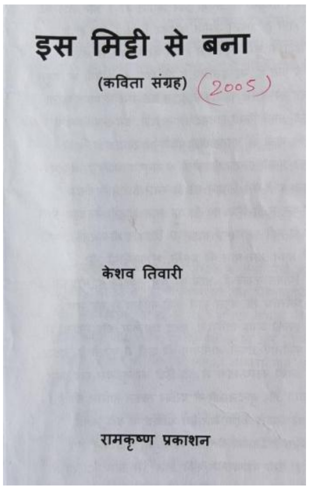
चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

चतुर्थ अध्याय
साहित्य सर्जना

समकालीन कविता में केशव तिवारी का आगमन नवें दशक से माना जाता है| जब उन्होंने साहित्य में प्रवेश किया, तो स्त्री विमर्श, दलित विमर्श और आदिवासी विमर्श के गर्दोगुबार से साहित्य जगत भरने लगा था| इसी समय सोवियत संघ के विघटन हुआ और दुनिया के विकासशील देशों के साथ भारत में भी भूमंडलीकरण की आहट सुनाई देने लगी| जिसके फलस्वरूप निजीकरण और उदारीकरण ने अपने पाँव पसारना शुरू कर दिया था| ये मुद्दे हिन्दी जगत में प्रमुखता से उभर रहे थे| लेकिन केशव तिवारी ने इन इकहरे विमर्शों के बरअक्स लोक संवेदनाओं और जन सरोकारों को अपने साहित्य की विषय बनाया| उन्होंने यह जान लिया था कि इन तमाम समस्याओं की जड़ कहाँ है? अब तक उनके तीन कविता संग्रह ‘इस मिट्टी से बना, ‘आसान नहीं विदा कहना’, ‘तो काहे का मैं’ प्रकाशित हो चुके हैं और वे अनवरत सृजनरत हैं|

4.1 इस मिट्टी से बना



केशव तिवारी हमारे समय के उन चुने हुए कवियों में हैं, जिन्होंने लोकधर्मी चेतना को सही मायनों में समझा है| उन्हें केदारनाथ अग्रवाल की धरती बाँदा में उनकी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले कवि के रूप में पहचाना जाना चाहिए| नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल के बाद लम्बे समय तक जो लोक और जन चेतना से जुड़ी कविताओं का अभाव हो चला था, केशव तिवारी ने अपने कवि कर्म की मार्फ़त उसे भरने या कम करने प्रयास किया है| ‘इसी मिट्टी से बना’ केशव जी का पहला कविता संग्रह है| जिनसे गुजरते हुए हम लोकधर्मिता जनचेतना और जनपदीयता का गहन बोध अनुभव कर सकते हैं| वे हिन्दी के उन गिने-चुने कवियों में हैं, जिन्होंने इस देश की लोक चेतना में विद्यमान दुःख-दर्द की तह तक जाकर उसके कारणों को बेपर्दा करने का कार्य किया है| जैसा कि कवि विजेंद्र ने इस संग्रह की भूमिका में लिखा है कि ‘इन कविताओं में भारतीय समाज के अंतर्विरोधों का तीखापन हैं| वर्गीय समाज की टकराहटें हैं| उनकी विरुपतायें और विडम्बनायें भी हैं| इसीलिए कविता में सहज नाटकीयता पैदा हुई है| कवि ने नये नायकों की खोज की है| यहाँ पारम्परिक एलीट सौन्दर्यबोध से बिल्कुल अलग और भिन्न जनवादी सौन्दर्यबोध रचा गया है| कहना न होगा कि ऐसी ही समकालीनता आगे तक प्रांसगिकता बनाए रखती है| जिसकी तस्दीक उनकी एक कविता है-

बस इसी तरह

‘महानायकों के बीच
एक अदना-सा चरित्र
महाग्रंथों से
छूट गया कोई शब्द
चुप पड़ी झील में
एक कंकड़ की दखल
दीवार पर चित्र उकेरते
बच्चे के लापरवाह हाथों में
जैसे खड़िया का कोई टुकड़ा
बस इसी तरह मैं
दुनिया में और
दुनिया मुझमें जिंदा है."



- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है| इसलिए समाज ने कुछ दायित्व उसके लिए निर्धारित किये हैं, जिसे उनको पूरा करना होता है| विरासत में मनुष्य को केवल धन सम्पदा ही नहीं मिलती, बल्कि तमाम दायित्व भी मिलते हैं, जिसे उसे पूरा करना होता है| 'विरासत' कविता में केशव तिवारी लिखते हैं कि विरासत में मुझे एक बिना ब्याही बहन, थके-हारे पिता, जिन्हें खुद सहारे की आवश्यकता थी| कुछ अधूरे सपने जिन्हें अब मुझे पूरा करना था| साथ मिला था, तो बस आशीर्वाद| जो सहारे की तरह था| उनकी कविता है-

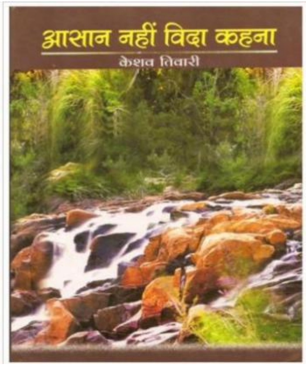
विरासत

'माँ सौंप गई एक
बिन ब्याही बहन
टूटे हुए पिता
अधबना मकान
लंगड़े लूले सपनें
अपनी धुंधली होती यादें
और कुछ आशीर्वाद.'



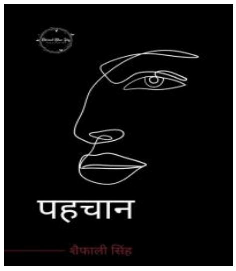
4.2 आसान नहीं विदा कहना

इस संग्रह में कवि बहुत सजगता और समग्रता के साथ हमारे समक्ष आता है| विषयों का चयन, भाषा और सशक्त हुई है| एक ऐसे समय में जब दुनिया को एक रंग में रंग देने का अभियान तेज हो चला था, बाजार ने अपनी मजबूत पैठ हर घर-परिवार में बना ली थी; तब केशव तिवारी गाँव-जवार से जुड़े दृश्यों को उभारने में लगे थे| वे यह बता रहे थे कि इस बाजार के हमले से हमें अगर कोई बचा सकता है, तो वह है हमारी गाँव की परम्परा और सद्भाव| बाजार के जादू में जो हमारी मनुष्यता खोती जा रही है, उसका प्रतिरोध न किया गया, तो एक दिन हम हिंसक जानवर में तब्दील हो जाएँगे| फिर एक दिन वही हिंसा हमारा विनाश कर देगी| 'गड़रिया' कविता में वे इस बात को रेखांकित करते हैं कि हम ऐसे समय में प्रवेश कर चुके हैं, जब किसी की व्यक्तिगत पहचान और हुनर का कोई अर्थ नहीं रह गया है| लेकिन अगर हम इस सब के खिलाफ एक बार तानकर खड़े हो जाएँ, तो बड़ी-बड़ी ताकतों का किला ढह जाता है| वे कहते हैं-



गड़रिया

'यह वक्त ही
एक अजीब अजनबीपन में जीने
पहचान खोने का है
पर ऐसा भी तो हुआ है
जब-जब अपनी पहचान को खड़ी हुई हैं कौमें
दुनिया को बदलना पड़ा है
अपना खेल.



केशव तिवारी यह बताने का प्रयास करते है कि हमारे समय में जो उदासी, बेरुखी और अजनबीपन बढ़ता जा रहा है| हमारे त्यौहार और उत्सवों भी उसका एक प्रतिरोध हैं, जो कुछ समय के सबकुछ भूल जाने का माहौल देते हैं | वे कहते हैं कि नवरात्रि में देवी पूजन, रामलीला, दीपावली आते ही इस देश का आमजन कुछ समय के लिए अपना दुख-दर्द भूल जाता है| किसान धान की फसल आते ही झूम जाता है| उस पर यह त्यौहार उसकी ख़ुशी को दोगुनी कर देते हैं|

'कुंवार की शाम' कविता में वे लिखते हैं-

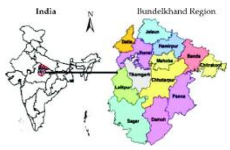


'यह कुंवार की शाम है
जीवन के हर संकट को

कुछ दिनों के लिए पीछे धकेल दिया है इसने.'

केशव तिवारी हमारे समय के उन संवेदनशील कवियों में हैं, जिन्होंने मनुष्य की ही तरह प्रकृति के दुःख को भी समझने का प्रयास किया है| वे कहते हैं कि कभी-कभी इन पहाड़ों के जाकर उनका भी दुःख पूछना चाहिए, कभी उनके भी कन्धे पर अपनेपन का हाथ रखना चाहिए| जैसे हर मनुष्य अपने जीवन गुजारे के लिए एक घर चाहता है, वैसे ही इन पहाड़ों के लिए भी घर होना, ताकि वे धूप बारिश से बच सकें|

आलोचक जीवन सिंह ने केशव तिवारी की कविताओं की आलोचना करते हुए लिखा है कि 'आज दिल्ली, लखनऊ, भोपाल, जयपुर किनते ही विकसित होकर बदल क्यों न गए हों लेकिन ज्यादातर भारतीयों का जीवन आज भी पुरानी लीकों से आगे नहीं आ पाया है. इसलिए जीवन की दरिद्रताजन्य दिक्कतें, अभाव और अकालों की मार भी देश का ग्रामीण मनुष्य झेलता है. जीवन के सारे संकट यहाँ हैं, लेकिन फिर भी यह जीवन अपने लिए प्रसन्नता के अवसर सृजित करता रहा है|"

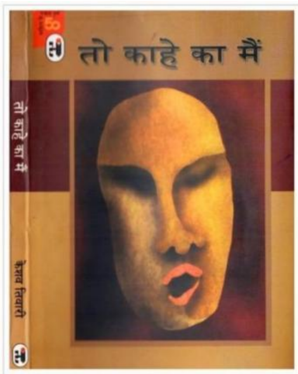


आलोचक रमाकांत शर्मा ने इस संग्रह पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि 'केशव तिवारी की कविताओं में बुंदेलखंड जनपद का स्पर्श बराबर बना रहता हैं. उनकी आधुनिकता आधुनिकतावादियों की आधुनिकता नहीं है. यहां लोक की देसी आधुनिकता से मुलाकातें होती हैं. ठीक उसी प्रकार जैसी देसी आधुनिकता त्रिलोचन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और विजेंद्र की कविताओं में देखने को मिलती हैं. केशव की कविताओं की एक विशेषता यह भी है कि वे अत्यंत विश्वसनीय हैं, नकली कवियों की नकली कविताओं से सर्वथा भिन्न, इनकी कविताएँ स्वतः स्फूर्त होने के साथ-साथ सहज किन्तु संश्लिष्ट हैं. केशव तिवारी ने केदारनाथ अग्रवाल के बुन्देलखंड जनपद को और अधिक सजीव रूप में प्रस्तुत किया हैं|"

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कि इस संग्रह में कवि ने उन समस्त मुद्दों पर अपनी पैनी नजर डाली है, जो मनुष्यता पर खतरे की मंडरा रही हैं| केशव जीवन के ऐतिहासिक क्रम में वे कभी द्वंद्वात्मकता के पथ को नहीं छोड़ते| इसलिए भौतिकता से विचलित होने का प्रश्न ही नहीं उठता| हमारे जीवन की मिथकीय वास्तविकताओं से कवि को परहेज नहीं है, परन्तु लोकविश्वासों के नाम पर उनका अंध समर्थन भी नही करते| एक सजग और कलावत कवि अपनी कविता में अपने समय और जीवन को कई दृश्यमान रूपों के माध्यम से लाता है वह अपने आसपास के व्यक्ति चरित्रों के वैशिष्ट्य को कुछ इस तरह सृजित करता है कि आस-पास की स्वार्थबद्ध दुनिया को कुछ दिखला सके, कुछ कह सके इस प्रक्रिया में वह साधारण दिखने वाले व्यक्तियों की असाधारणता को रेखांकित करता है|

4.3 तो फिर काहे का मैं

22 केशव तिवारी का तीसरा कविता संग्रह 'तो काहे का मैं' ऐसे समय में हमारे सामने आता है, जब दुनिया में छल कपट का बोलबाला हो चुका था| लोग उसे जीवन का एक अनिवार्य गुण मानने लगे थे| ऐसे में वे सहयोग और सहकर की अपील करते हैं तथा ऐसा न करने पाने पर खुद को प्रश्नांकित करते हैं, उन्हें एक सजग और उदार मनुष्य होने के नाते लगता है कि उन्होंने कुछ गलत कर दिया या उनके सामाजिक उत्तरदायित्व में कोई कसार रह गई| इसलिए वे इसी संग्रह की 'तो काहे का मैं' शीर्षक कविता में कहते हैं कि-



'तो काहे का मैं
किसी बेईमान के आँखों में
न खटकूं तो काहे का मैं
मित्रों के गाढ़े में याद ना आऊं
तो काहे का मैं
कोई मोहब्बत से देखे और मैं उसके
सीने में सीधे न उतर जाऊं
तो काहे का मैं
अगर यह सब कविता में तुम्हें
सिर्फ सुनाने के लिए सुनाऊं
तो फिर काहे का मैं|'

केशव तिवारी के लिए कविता लिखना इतना पवित्र काम है कि उन्हें लगता हैं कि कविता लिखते-लिखते मैं आत्ममुग्ध तो नहीं हो गया| वे केवल लिखने के लिए कविता नहीं लिखते| जैसा कि एक सजग कवि हमेशा अपने कवि कर्म पर सवाल उठाता रहता है| आत्मावलोकन करता रहता है| यही

कसौटी उसे हमेशा सही रास्ता दिखाती रहती है| उनकी कविता है—

‘ कविता लिखना एक आत्ममुग्ध
दुनिया में
खुद के ऐब गिनाने सा
लगता है।
कोइ रोकता है कहता है ठहरो
हर वक्त चलते रहना भी
अच्छी आदत नहीं है।’



‘सौन्दर्यबोध’ कविता में कवि ने किसान जीवन की बेबसी का बड़ा ही मार्मिक चित्र खींचा है| जिसमें वे इस बात को रेखांकित करते हैं कि बाजार में बिकने वाली चीजों को एक किसान कितनी हसरत से देखता है| उसके मन में उन चीजों को पाने की हूक उठती है, लेकिन कमबख्त जेब उसका साथ नहीं देती| वह मन मारकर रह जाता है| इस कवि कहता है कि किसान के लिए सौन्दर्यबोध वस्तुएं नहीं, धन तय करता है|

‘यह एक खाली जेब किसान
जिस आशा और ललक से
देख रहा है
आम के इन टिकोरों को
मैं उसे ऐसा क्यों नहीं देख पाता
मुझे मालूम है मैं उसे
कहीं से भी खरीद सकता हूं
मेरा सौन्दर्यबोध
मेरी जेब में पड़ा पैसा
तय करता है।’



गाँव में भी अब प्रेम सौहार्द की जगह ईर्ष्या और वैमनस्य ने ले ली है| उस बदले हुए माहौल को ‘अवध की रात’ कविता में स्पष्ट तौर पर पर देखा जा सकता है| गाँव में युवा वर्ग किस तरह नशे में डूबा हुआ है| जिसने पूरी पीढ़ी को पढ़ाई-लिखाई, काम-धन्धे से मोड़कर आवारा बना दिया है| अब वह सृजन के बजाए तरह-तरह के षड्यन्त्रों में लगे रहते हैं| अब कोई किसी के दुःख-दर्द की खबर नहीं लेता, शाम होते ही सब अपने-अपने घरों में कैद हो जाते हैं| कवि लिखता है—

‘घर-घर चलती है रात भर
महुआ की खींची कच्ची दारु
मिल बैठकर रचे जाते हैं
हत्या के षड्यंत्र
गांव के गांव चलती है
हत्यारों की हांक
भेड़ों की तरह शाम से ही
घरों में कैद हो जाते हैं लोग
शहरों से असाध्य बीमारियां कमाकर लौटे युवा
लेटे हैं झिनगा पर
दरवाजों के सामने खांसते
यह शामें अवध नहीं



अवध की रात है।’

पंचम अध्याय

शैक्षिक मूल्य परक कविताएँ

पंचम अध्याय

शैक्षिक मूल्य परक कविताएँ

केशव तिवारी जी के काव्य में अनेक शैक्षिक मूल्य परक रचनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं, जिनका विवरण निम्नवत हैं—

5.1 पाठा की बिटिया

गहरा सांवला रंग

पसीने से तर सुतवा शरीर

लकड़ी के गट्ठर के बोझ से

अकड़ी गर्दन



कहाँ रहती हो तुम

कोल गदहिया, बारामाफी, टिकरिया

कहाँ बेचोगी लकड़ी

सतना, बांदा, इलाहाबाद

क्या खरीदोगी

सेंदुर, टिकुली, फीता

या आटा, तेल, नमक

घुप्प अँधेरे में



घर लौटती तुम

कितनी निरीह हो

इन गिद्धों भेड़ियों के बीच

तुम्हारे दुखों को देखकर

खो गया है मेरी भाषा का ताप

गड्डमड्ड हो गए हैं बिम्ब

पीछे हट रहे हैं शब्द

इस अधूरी कविता के लिए

मुझे माफ़ करना

पाठा की बिटिया.

भावार्थ

पाठा की बिटिया शीर्षक कविता में मानिकपुर के घने जंगलों से लकड़ी काटकर शहर में बेचने को विवस नारी के सौंदर्य का चित्रांकन करते हुए कहता है कि पाठा की बिटिया की देहयष्टि गहरा सांवला रंग श्रम जन्य पसीने से तरबतर लकड़ी के गठ्ठर को सिर पर रखे फिर भी वह बिटिया अपनी अस्मिता को बनाए हुए हैं। अकड़ी गार्दन वाली यह बिटिया कोलगदहिया, बारामाफी टिकरिया जैसे बनांत क्षेत्रों से लकड़ी का गठ्ठर सतना, बाँदा, इलाहाबाद जैसे नगरों में बेचने आती है, और इस विक्रय से प्राप्त धन से उधरपूर्ति, एवं अपने सौंदर्य प्रसाधनों को खरीद कर घने तमस में घर लौटी है कवि का सूक्ष्म निरीक्षण कितना सटीक है की ऐसे यौवनगन संपन्न युवति को वासना लोलुप से ताक रहे मानव भेड़ियों का डटकर सामना करती है। बिटिया के इस संघर्ष गाथा का चित्रण करने में कवि अक्षम है| उसकी भाषा की अभिव्यंजना कुंठित हो गई है। सौंदर्य बोध कर्म कुशलता श्रम सीकर से नहाई हुई बिटिया की जिजीविषा को देखा कवि आवाक रह जाता है इस अधूरी कविता के लिए छमा याचना सा करता है।

प्रासंगिकता

बञ्जर बुंदेली धरती में जहां पलाश ही कमल हो पत्थरों को तोड़ने से निकले श्रम सीकर मुक्ता कहलाते हैं, ऐसी परिस्थिति में संवेदना बनाए रखना केशव तिवारी जैसे समर्थ कवियों का ही काम है, उनकी कविता पाठा की बिटिया उनके काव्य संग्रह इस मिट्टी से बना से उद्धृत है, जिसमें श्रमसिला महिला की जिजीविषा कर्मठता का चित्रण किया गया है।

टिप्पणी

- कवि ने गद्यात्मक कविता में उत्पन निरस्त को समाप्त कर एक प्रवाही भाषा का सृजन किया है, जिसमें सुतवा, गठ्ठर, सिंदूर, टिकुली, फीता, धूप, गड्मगड्य जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

- कवि ने पुरानी सौंदर्य बोध की अपेक्षा नए-नए किंतु प्रभावी सौंदर्य प्रतिमानों का प्रयोग किया है, जिसमें स्वर्णआभा, देहबल्भी जैसे कामशास्त्रीय नायिका के उपमानों के स्थान पर आधुनिक युग बोध के अनुरूप नायिका के शारीरिक सौंदर्य का चित्रण किया है।

- पाठा के सामाजिक जीवन में व्याप्त विरोधाभास एवं विडंबना का चित्रण कवि ने बैंक रूप में किया है, जिसमें नारी कठिन परिश्रम कर लकड़ी के गठ्ठरो को शहर में बेचकर पेट की / उदरपूर्ति के साथ कहीं गहरे अंतरमन में छिपे सौंदर्य के प्रसाधनों के प्रति सदर है।

- कवि ने लाचार विवस और नारी सौंदर्य के सौदागरों का बिम्ब बहुत ही सजीव रूप में चित्रित किया है, साथ ही यौवनागमन की संधि पर खड़ी नारी के सौंदर्य का चाचुष प्रत्यक्षीकरण कराया हैं।

- इस कविता में कवि ने नारी के श्रमित रूप को देखकर अपनी अनिर्वचनीयता बताई है, क्योंकि जहां सौंदर्य बोध के लिए वस्तु के साथ दृष्टि का चित्रण है, वहीं कई की भाव संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

5.2 नहीं मेरे बेटे नहीं

मेरे बेटे अगर ये सारा का सारा आकाश

मैं तुम्हें दे भी दूं

समेट कर छतरी की तरह

बोलो क्या करोगे?

सम्हाल पाओगे ऐसी छतरी ?



जो तुम्हारे खोलते ही ढांक ले दुनिया

और ये आकाश जिस पर तमाम लोगों का हक़ है

तुम्हारे कमरे के किसी कोने में पड़ा हो

और वो गौरैया का बच्चा जिसने सीखा है



उड़ना अभी-अभी.......

बैठा रहे तुम्हारे इंतज़ार में

नहीं मेरे बेटे नहीं तुम्हें तो

खुद ही चाहिए एक खुला आकाश

ठीक गौरैया के बच्चे की तरह.



भावार्थ

कवि 'नहीं मेरे बेटे नहीं' शीर्षक कविता के माध्यम कवि से बेटे से कह रहा है कि इस दुनिया में सारी सुख सुविधा सारा वैभव केवल हमारे लिए नहीं है। इस दुनिया में मनुष्यों के साथ पशुओं पक्षियों चिड़ियों का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है| यह दुनिया उनके लिए भी है, यहां के सुखों पर उनका भी अधिकार है| इसलिए मेरे बेटे यदि मैं पूरा आकाश तुम्हें समेट कर दे दूं, तो बन्द छतरी की तरह तुम उसका क्या करोगे। जैसे बन्द छतरी बारिश से नहीं बचा पाती वैसे ही इतने सुख का तुम क्या करोगें! तुम उसे संभाल नहीं पाओगें और इस आकाश में तो तमाम लोगों का हक है, उसे केवल तुम्हें कैसे दिया जा सकता है। तुम उस गौरैया के बच्चे को देखो, जो तुम्हारे घर के किसी कोने में पड़ा है। जिसने अभी उड़ना सीखा है| जो खुले आसमान में उड़ा जा रहा है| मेरे बेटे तुम्हें भी उसे गौरैया की तरह खुद उड़ना सीखना चाहिए और आकाश अपना खुद बनाना चाहिए। अपनी जगह बनानी चाहिए|

प्रसंगिकता

इस कविता के माध्यम से कवि अपने बेटे को आधार बनाकर समाज को यह सीख देना चाहता है कि इस दुनिया में हर व्यक्ति अपने विकास का स्वतंत्र पक्षधर है, जो उसके स्वतंत्र विकास के लिए आवश्यक है।

5.3 पिता

कल्प वृक्ष नहीं थे पिता

ऊसर में खड़े बबुर थे पिता

अम्ल और छार पीकर ज़िन्दा रहे

पिता थे तो जिंदा था मेरे भीतर

बच्चा होने का अहसास

पहाड़ी तोते की तरह

फुर्र से नहीं उड़ गए पिता

बूढ़े बाज की तरह

हवा के खिलाफ

पंख फड़फड़ाते उड़ते चले गए हैं पिता.

माघ-पूस के कठिन जाड़े में

अलाव की आंच थे पिता

कल्प वृक्ष नहीं थे पिता





भावार्थ

केशव तिवारी कहते हैं कि पिता का जीवन में जो स्थान है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है| वह बताते हैं कि पिता कल्पवृक्ष की तरह नहीं थे| वह ऊसर जमीन में खड़े बबूल के पेड़ की तरह थे| वे अम्ल और छार जैसी चीजों को पीकर जिंदा रहे| माठा उन्होंने पिया, सादा भोजन किया| यही उनकी जिंदगी थी| जब तक पिता रहते हैं, तब तक मनुष्य कितना ही बड़ा क्यों ना हो जाए, उसे बच्चे होने का एहसास हमेशा बना रहता है| उसे महसूस होता रहता है कि उसे बाद भी कोई है| वे आगे लिखते हैं कि पहाड़ी तोते की तरह फर से नहीं उड़े| वह एक बाज की तरह जीवन भर लड़ते रहे| हवा के खिलाफ लड़ते रहे| तमाम संघर्षों के बीच लड़ करके अपनी जगह बनाते रहे| चाहे माघ-पूस की ठंडी हो उसमें पिता का होना अलाव की आज की तरह होता था, जिसमें हमेशा एक आत्मीयता, एक ऊष्मा, एक गर्माहट महसूस होती रहती थी| पिता के होने से ही मैं भी था| मेरे पिता कल्पवृक्ष नहीं थे| वह आम इंसान की तरह हमेशा मेरे साथ रहे जैसे की हर बच्चे के साथ उसका पिता रहता है।

प्रासंगिकता

एक बालक के लिए उसके पिता का जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है, यह कविता उसे बात को रेखांकित करने का कार्य करती है। एक पिता अपने बाल बच्चे के लिए जीवन में कितने दुख सहन करता है, अपने बालक को हर तरह की कठिनाइयों संकटों से बचता है| इसलिए केशव तिवारी कहते हैं कि पिता जाड़े के मौसम में आग की तरह थे।

5.4 बाँदा

अभी बहुत कुछ हैं

इस शहर में



मानिक कुइयां, छाबी तालाब

टुनटुनियाँ पहाड़

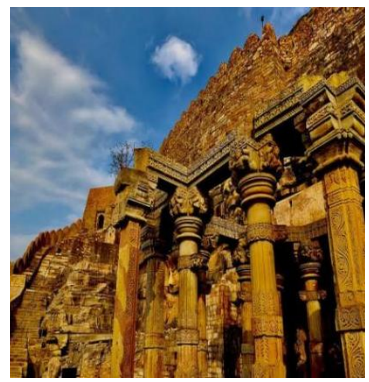
केन और

उसके गर्भ में शजर

इन्हीं चीजों से जाना जाएगा यह शहर

मंदिर-मस्जिद के विवाद से नहीं

राजनीति के दाव पेंच से नहीं



अदभुत है इस शहर का

अपने लोगों से प्यार

लोग भी टूटकर

चाहते है इसे

इसे छोड़कर मद्रास मे.

नहीं टिक पाते केदार

लौट लौट आते हैं



जानने को इसका हाल

नए कवि लिखते हैं इस पर कविता

और निकल जाते हैं

रोजी की तलाश में

ये शहर है

बोड़े हलवाई, दुलीचंद मोची का

आज की कविता में

जीता है ये शहर

ये शहर जीता है

चमड़े पर उस्तरा देते

पीरु मियाँ की आँखों में

अभी बहुत कुछ है

इस शहर में|

भावार्थ

केशव तिवारी अपनी बांदा नामक कविता में लिखते हैं कि अभी भी इस शहर में बहुत कुछ बचा हुआ है| वह मानिक कुइयां, छाबी तालाब, टुनटुनिया पहाड़ और केन नदी में पाए जाने वाले बांदा की विशेष पहचान शजर पत्थर को भी रेखांकित करते हैं| वह कहते हैं, इन्हीं सब चीजों से बांदा को जाना जाएगा| यह शहर मंदिर मस्जिद विवाद राजनीति के दाँव-पेंच के लिए नहीं जाना जाएगा| इस शहर को लोग इतना चाहते हैं कि केदारनाथ अग्रवाल जैसे कवि मद्रास जैसे शहर को छोड़कर पुन: इसी शहर आ बसते हैं। नए कवि इसी शहर पर कविताएं लिखते हैं और निकल जाते हैं रोजी-रोटी की तलाश में। केशव तिवारी बांदा शहर के हलवाई दुलीचंद मोची आदि का जिक्र करना भी नहीं भूलते| चमड़े को घिसने वाले पीरु मियां को भी इस कविता में याद करते हैं।

प्रासंगिकता

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड के बांदा जिले की एक समृद्ध विरासत रही है। केन के किनारे बसा यह शहर अनेक तरह के इतिहास अपने आप में समेटे हुए है। केशव तिवारी ने बांदा शहर के इसी इतिहास का जिक्र अपनी इस 'बांदा' नामक कविता में किया है| जिसमें वह शहर के मोची से लेकर हवाई और कवियों तक को याद करते हैं| वह कहते हैं कि तमाम कमियों के बावजूद, तमाम संकटों के बावजूद, अभी यह शहर जिंदा है| इसकी आत्मा जिंदा है और बहुत कुछ इस शहर में देखने लायक अभी भी बचा हुआ है| एक जिले को एक शहर को पहचान दिलाने लायक कविता अपनी परंपरा में अनूठी है| मुझे लगता है, बांदा को लेकर उसके इतिहास को लेकर यह शायद पहली कविता है| जिसने बांदा की समूची विरासत और परंपरा को समेट लिया है।

5.5 माँ



माँ बांचती थी रामायण

सींचती थी तुलसी

पुरती थी बाती

दिए के लिए

शाम ढलने के

पहले ही

उजालों के देश में

आई थी माँ और



चमकती रही हमारे बीच

अक्षय ज्योति शिखा-सी

नीम की गझिन

छाया थी माँ



जिसके सनेह के फूल

झरते ही रहे हमारे ऊपर

सदानीरा नदी थी माँ

जो बहती रही

पितृ-संस्कृति के

पहाड़ों के बीच......

भावार्थ

इस कविता में केशव तिवारी कहते हैं कि मां तुलसी सींचती थी। रामायण पढ़ती थी| दीपक जलती थी। मां कभी ना बुझने वाली ज्योति की तरह आजीवन हमारे बीच जलती रही| हमें प्रकाश देती रही| वह नीम की घनी छाया की तरह थी, जिसने हमारे ऊपर कभी धूप नहीं पड़ने दी, जिसके प्यार के फूल हमारे ऊपर हमेशा झड़ते रहे| वह हमेशा बहने वाली नदी की तरह थी, जो पितृ संस्कृति के पहाड़ों के बीच द्वंद करके बहती रही और पूरे परिवार के सींचती रही।

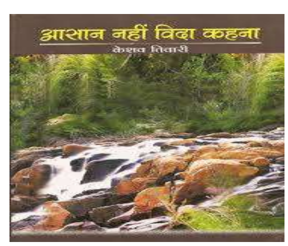
प्रासंगिकता

मां दुनिया का ऐसा शब्द है, जिसके वजन का दूसरा कोई शब्द नजर नहीं आता। एक बालक के लिए मां समूची दुनिया है| उसके बाहर की दुनिया मां के कारण ही है| केशव तिवारी अपनी इस कविता में मां को कभी ना बुझने वाली ज्योति नीम की ठंडी छांव और सदानीरा नदी की तरह याद करते हैं।

5.6 आसान नहीं विदा कहना

आसान नहीं विदा कहना

गजभर का कलेजा चाहिए



इसके लिए

इस नदी से विदा कहूँ

भद्दर गर्मी और

जाड़े की रातों में भी

भाग-भाग कर आता हूँ

जिसके पास



इस पहाड़ से

विदा कहूँ जहां आकर

वर्षों पहले

खो चुकी

माँ की गोद

याद आ जाती है



विदा कहूँ उन लोगों से

जो मेरे हारे गाढ़े खड़े रहे

मेरे साथ

जिन्होंने बरदाश्त किया

मेरी आवारगी

हद दर्जे के पार

आसान नहीं है

विदा कहना..

भावार्थ

जीवन में किसी को भी विदा कहना इतना आसान काम नहीं है| इसके लिए बहुत बड़ी छाती चाहिए, चाहे वह मनुष्य हो या प्रकृति। इसी कविता में केशव तिवारी कहते हैं कि उस नदी से मैं कैसे विदा कहूं, भयानक गर्मी से भी कैसे विदा कहूं; क्योंकि ठंड की रातों में वही गर्मी याद आती है| उन पहाड़ों से कैसे विदा कहूं जहां आकर वर्षों पहले खोई मां की गोद याद आ जाती है| वे आगे कहते हैं कि मैं उन लोगों से कैसे विदा कहूं, जिन्होंने संकट के समय मेरा साथ दिया, जिन्होंने मेरे आवारापन को बर्दाश्त किया| मेरी कमजोरी को माफ किया, मेरे हद से पार जाने पर जिन्होंने कुछ नहीं कहा उन लोगों से मैं विदा कैसे कहूं|

प्रासंगिकता

इस कविता की प्रासंगिकता यह है कि हमें अनेक प्रसंगों के माध्यम से कवि हमें यह बताता है कि संकट के समय साथ देने वाले लोगों को कभी छोड़ना नहीं चाहिए| जिन लोगों ने दुख में साथ दिया है, जो तुम्हारे अधूरेपन को पूरा बनाते रहे उन लोगों को कैसे छोड़ा जा सकता है| अर्थात उन्हें छोड़ना भी एक अन्याय है| वह पहाड़ को देखते हैं, तो ठंड याद आती है और नदी को देखते हैं, तो गर्मी याद आती है।

5.7 सौन्दर्यबोध

यह एक खाली जेब किसान

जिस आशा और ललक से



देख रहा है

आम के इन टिकोरों को

मैं उसे ऐसा क्यों नहीं देख पाता

मुझे मालूम है मैं उसे

कहीं से भी खरीद सकता हू्



मेरा सौन्दर्यबोध

मेरी जेब में पड़ा पैसा

तय करता है।

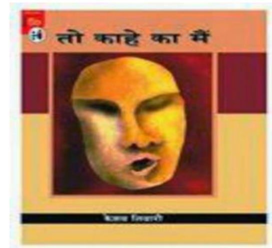
भावार्थ

हर मनुष्य के जीवन में सौंदर्य बोध का एक विशेष स्थान है। लेकिन वह सौंदर्य बोध कई बार हमारा मन नहीं, बल्कि बाहर की दुनिया तय करती है। इस कविता में कवि कहता है कि एक किसान बाजार में बिक रहे आमों को जिस ललक से देख रहा है, मैं उसे लालच से नहीं देख पाता; क्योंकि मैंने उन्हें प्राप्त करने के लिए किसी परिश्रम का सामना नहीं किया; लेकिन उस किसान को उन्हें प्राप्त करने के लिए सैकड़ो बार सोचना पड़ता है| उसके सामने तमाम समस्याएं हैं और धन सीमित| इसलिए वह बार-बार सोचता है कि अपनी जीभ को समेटकर वह अपनी दूसरी आवश्यकता पूरी करे| जिसके बगैर वह जी नहीं सकता| इसलिए कवि कहता है कि कई बार सौंदर्यबोध वह वस्तु नहीं, बल्कि जेब में पड़ा धन तय करता है।

प्रासंगिकता

इस कविता की प्रासंगिकता यह है कि यह बताती है कि हमारे लिए जीवन में धन अनेक बार नीति निर्धारक बन जाता है। हमें उसे चीज की आवश्यकता है, लेकिन हम उसे खरीद नहीं सकते; क्योंकि धन नहीं है। हमारे लिए भले ही जीवन में सौंदर्य बोध अलग-अलग हों| लेकिन गरीब आदमी के लिए धन सौंदर्यबोध को तय करता है। यह हमारे समाज की कितनी बड़ी विडंबना है कि हजारों साल बाद भी हम बार-बार अपनी आत्मा को कुचलना के लिए अभिशप्त है

5.8 तो काहे का मैं



किसी बेईमान के आँखों में

न खटकूं तो काहे का मैं

मित्रों के गाढे में याद ना आऊ

तो काहे का मैं

कोई मोहब्बत से देखे और मैं उसके

सीने में सीधे न उतर जाऊं

तो काहे का मैं

अगर यह सब कविता में तुम्हें

सिर्फ सुनाने के लिए सुनाऊं

तो फिर काहे का मैं।



भावार्थ

कवि केशव तिवारी कहते हैं कि अगर किसी बेईमान आदमी की नजर में न खटकूं, मित्रों के संकट के समय का न आऊं तो मेरे होने का क्या मतलब है! कोई हसरत भरी प्रेम की निगाहों से मेरी ओर देखे और मैं उसके दिल में अपनी जगह नहीं बना पाता, तो मेरे होने का क्या अर्थ। इतना ही नहीं, यह सब बातें केवल कविता में सुनाने के लिए तुम्हें सुनाउं और उन्हें जीवन में अमल न करूं, तो ऐसी कविता किस काम की। कविता तो जीवन के संघर्ष से जन्म लेती है, लेकिन बगैर संघर्ष के लिखी गई कविता के मानी नहीं होते।

प्रासंगिकता

इस कविता की सबसे बड़ी प्रासंगिकता यह है कि यह महज उपदेश नहीं देती, बल्कि जीवन में कुछ कर दिखाने के लिए प्रेरित करती है। मनुष्य का जीवन यदि समाज के काम न आ सका, तो ऐसे जीवन का क्या लाभ!

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य का अध्ययन करना अभीष्ट था, जिसके निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

6.1.1 व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी

- कवि केशव तिवारी का जन्म 4 नवम्बर, 1963 को कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वितीया दिन सोमवार को ग्राम- पूरेदला, जेठवारा जिला-प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ था, जो उनका ननिहाल था|
- उनका पैतृक गाँव जोखू का पुरवा, प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में है|
- तिवारी जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में व्यतीत होने की वजह से ग्रामीण जीवन के पल-पल संघर्षों, प्राकृतिक सौंदर्य, नदी, खेत, फसल, किसान, मजदूर, पेड़, पहाड़, को जाना समझना और अनुभूत किया। जिसकी झलक उनकी काव्य रचनाओं में दिखाई देती है।
- तिवारी जी जब इलाहाबाद में पीसीएस की तैयारी करने आए, वहीं से उनका सम्पर्क मार्क्सवाद से हुआ| जिसकी सोहबत में उन्होंने समाज की तमाम कमजोरियों को जांचने परखने का अवसर मिला|
- जब उनका राब्ता समाज से हुआ, तो पाठा के जंगल में घूमने वाली बिटिया, बांदा और कालिंजर जैसी कविताएँ निकलीं|
- तिवारी जी को जीविकोपार्जन का मौका बाँदा में मिला|
- तिवारी जी अपनी नौकरी करते रहे और साथ में भ्रमण भी करते रहे और भ्रमण में जो कुछ देखा समझा उस पर कविता लिखते रहे|
- केशव तिवारी ने बुन्देलखण्ड को अपनी आत्मा में बसा लिया| कोई बुन्देलखंडी भी यहाँ के बारे में इतना न जानता होगा, जितना केशव जी जानते हैं| उन्होंने यहाँ का चप्पा-चप्पा घूमा-देखा|
- पाठा के जंगलों से लेकर महोबा की ठाठ और कालिंजर के किले और बाँदा की केन नदी तो उनके लिए घर आँगन की तरह है|
- जब भी उनका मन उदास हुआ, इन दोनों जगहों ने उसे बाग-बाग कर दिया| उदासी का भी अपना सच होता है, कालिंजर और केन नदी मनुष्य को उदासी के पार एक नयी दुनिया बनाती हैं|
- बाँदा ने उनका मन ऐसा मोह लिया कि वे बस यहीं के हो गए| लेकिन इस सब के बीच वे अपनी कर्मभूमि अवध को नहीं भूले|

- कवि केशव तिवारी जी अपनी रचनाओं से हिन्दी सहित्य की प्रगतिशील धारा को समृद्ध किया|
- तिवारी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार हैं।
- हिन्दी कविता में केशव तिवारी का आगमन नवें दशक से माना जाता है|
- जब उन्होंने साहित्य में प्रवेश किया, तो स्त्री विमर्श, दलित विमर्श और आदिवासी विमर्श के गर्दोगुबार से हिन्दी साहित्य जगत भरने लगा था| इसी समय सोवियत संघ के विघटन हुआ और दुनिया के विकासशील देशों के साथ भारत में भी भूमंडलीकरण की आहट सुनाई देने लगी| जिसके फलस्वरूप निजीकरण और उदारीकरण ने अपने पाँव पसारना शुरू कर दिया था| ये मुद्दे हिन्दी जगत में प्रमुखता से उभर रहे थे| लेकिन केशव तिवारी ने इन इकहरे विमर्शों के बरअक्स लोक संवेदनाओं और जन सरोकारों को अपने साहित्य की विषय बनाया| उन्होंने यह जान लिया था कि इन तमाम समस्याओं की जड़ कहाँ हैं?
- अब तक उनके तीन कविता संग्रह **इस मिट्टी से बना**, **आसान नहीं विदा कहना**, **तो काहे का मैं,** प्रकाशित हो चुके हैं और वे अनवरत सृजनरत हैं|
- तिवारी जी कुछ फुटकर कविताएँ अलग-अलग पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं|

6.1.3 शैक्षिक मूल्य सम्बन्धी

- 'बाँदा' कविता में तिवारी जी ने बांदा शहर को बड़ी गहराई से देखा हैं और बाँदा के बारे में सम्पूर्ण जानकारी बताई चाहे केन का किनारा हो, कालिंजर किला, भूरागढ़ का किला, दुलीचंद मोची सबको वे याद करते हैं| उन्हें बांदा से इतना लगाव हो गया है कि वे कहीं भी जाएँ सुख और शान्ति उन्हें बाँदा में ही मिलती है|
- 'नहीं मेरे बेटे नहीं' कविता में तिवारी जी अपने बेटे के माध्यम से समाज को यह सीख दे रहे हैं कि इस दुनिया में पशु, पक्षी, चिड़िया, आकाश, में सभी लोगों का हक है| यह सब चीज किसी एक के लिए नहीं है ।
- 'मां' कविता में तिवारी जी बताते हैं कि माँ दुनिया का ऐसा शब्द है, जिसके वजन का दूसरा कोई शब्द नजर नहीं आता। एक बालक के लिए मां समूची दुनिया है| उसके बाहर की दुनिया मां के कारण ही है| केशव तिवारी अपनी इस कविता में मां को कभी ना बुझने वाली ज्योति नीम की ठंडी छांव और सदानीरा नदी की तरह याद करते हैं।
- 'दोस्त या दुश्मन' कविता में केशव तिवारी जी कहते हैं कि हम कैसे समय में आ गए हैं, जहाँ दुनिया दो धड़ों में बंट गई है| आप या तो दोस्त हो सकते हैं या दुश्मन| यानी तटस्थ रहने का कोई विकल्प ही नहीं है|
- 'आसान नहीं विदा कहना' कविता में तिवारी जी यह बताते हैं कि किसी भी प्रकार से किसी भी व्यक्ति, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, पहाड़-जंगल से अलग नहीं हुआ जा सकता, यह सब व्यक्ति के हमेशा साथ जुड़े रहते हैं।
- 'पिता' कविता के के माध्यम से कवि यह बताते हैं कि एक बालक के लिए उसके पिता का जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है| यह कविता उसे बात को रेखांकित करने का कार्य करती है। एक पिता अपने बाल बच्चे के लिए जीवन में कितने दुख सहन करता है| अपने बालक को हर तरह की कठिनाइयां संकटों से बचता है|

- ‘सौंदर्य’ कविता के माध्यम से कवि यह बताते हैं कि हमारे लिए जीवन में धन अनेक बार नीति निर्धारक बन जाता है। हमें किसी चीज की आवश्यकता है, लेकिन हम उसे खरीद नहीं सकते; क्योंकि धन नहीं है। जीवन में हर मनुष्य के लिए सौंदर्यबोध अलग-अलग है, लेकिन गरीब आदमी के लिए धन सौंदर्यबोध को तय करता है। यह हमारे समाज की कितनी बड़ी विडंबना है कि हजारों साल बाद भी हम बार-बार अपनी आत्मा को कुचलने के लिए अभिशप्त हैं।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध अध्ययन के निष्कर्षों की सार्थकता उसके शैक्षिक उपादेयता पर निर्भर है। शैक्षिक निहितार्थ न होने पर शोध कार्य की कोई उपायोगिता सिद्ध नहीं होती है| जिससे अमूल्य समय एवं धन की हानि ही नहीं होती, बल्कि राष्ट्र को भी उसका लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं-

- जिस प्रकार केशव तिवारी जी ने ग्रामीण परिवेश में अपना जीवन व्यतीत करते हुए ग्रामीण जीवन को अनुभूत किया, उसी प्रकार हमें भी अपने परिवेश को गहराई से समझकर अपने जीवन में आत्मसात कर उसको अपने भावी जीवन में उपयोग कर सार्थक बनाना चाहिए।
- केशव तिवारी ने अपने अग्रज कवियों मसलन केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन और त्रिलोचन की लोकधर्मी काव्य परम्परा को आगे बढ़ाया; जबकि उनके समकलीन कवियों में यह गुण देखने को नहीं मिलता | उनके अपने समय के सभी कवियों से मित्रवत सम्बन्ध रहा| जो समय-समय पर उनकी काव्य प्रतिभा को निखारता रहा| इससे यह कहा जा सकता है कि हमें भी जीवन में अपने अग्रजों से अपनी परम्परा के बारे में सीखना चाहिए| अच्छे मित्र बनाने चाहिए जो जीवन में हमेशा सही दिशा दिखाते रहें|
- कवि केशव तिवारी हिन्दुस्तान यूनिलीवर में काम करते हुए रुचि पूर्वक लेखन को दृढ़ता से अपनाया| इससे यह सिद्ध होता है कि अगल मनुष्य दृढ़ संकल्प है, उसके मन समाज को लेकर गहरी करुणा का भाव है, तो समाज की संवेदनाओं को भली-भली-भांति समझ सकता है और इस क्षेत्र में उसकी नौकरी कहीं बाधा नहीं बनती| उसी प्रकार हमें भी जीवन में किसी क्षेत्र विशेष में ऊंचाई पर पहुंचना चाहिए, ताकि भविष्य में उसको आपदा के समय जीवन मापन के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।
- जिस प्रकार केशव तिवारी जी अपना शांत स्वभाव रखते हुए तथा आने वाली कठिनाईयों का सामना करते हुये अपना काम करते रहे, उसी प्रकार हमें भी किसी भी कर्मरत रहते हुए अपने मूल स्वाभाव की नहीं- छोड़ना चाहिए और हर प्रकार परिस्थिति से सामन्जस्य बैठाकर निरंतर उन्नति का प्रयास करते रहना चाहिए।
- जिस प्रकार तिवारी जी अपने जीवन में अनेक पुरष्कार प्राप्त कर देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई उसी प्रकार हमें भी किसी क्षेत्र विशेष की ऊंचाइयों को प्राप्त कर पुरस्कृत होकर अपने घर परिवार, समाज व देश का नाम रोशन करना चाहिए।
- जिस प्रकार तिवारी जी तीन काव्य संग्रह को देकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया अभी और भी सृजनरत हैं। उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में किसी क्षेत्र विशेष में अपना विशिष्ट योगदान करने का प्रयत्न करना चाहिए।
- पश्चिमी चकाचौंध व मोबाइल/ इण्टरनेट की दुनिया ने व्यक्ति को प्रकृति से कोसों दूर कर दिया है। जिसके कारण वह अवसाद, चिंता, तनाव, चिड़चिड़ापन एवं नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो गया है। अतः हमें अधिकाधिक प्रकृति के सानिध्य में रहने का प्रयत्न करना चाहिए। घर, परिवार, तथा विद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों को नदियों के सानिध्य में अधिकाधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी इनके महत्व को हृदयागम कर सकें।

- आज जंगल सिमटते जा रहे हैं और विकास के नाम पर कंकरीट के जंगल खड़े होते जा रहे हैं, जो पर्यावरण के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। पेड़-पौधों से ही हमारा अस्तित्व है। विद्यार्थियों को बचपन से ही इनका महत्व बताया-समझाया जाना चाहिए। घर-परिवार तथा विद्यालय हरीतिमा की दृष्टि से समृद्ध एवं आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करें। ऐसी कविताओं को प्राथमिक स्तर पर हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में स्थान दिया जाना चाहिए।
- हमें एक संघर्भीषशील मनुष्य की भांति हर परिस्थिति में संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहना चाहिए। जीवन में संकट आते रहते हैं, लेकिन शूरमा कभी रन नहीं छोड़ते|
- हमें तेज धार के पानी के समान बुलंद इरादों के साथ जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्याओं का सामना करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। इस तरह की कविताओं को माध्यमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्यपुस्तक को पर स्थान दिया जाना चाहिए।
- हमें जीवन के संघर्षों में उतार-चढ़ाव में हमेशा कर्तव्य एवं सत्य के पथ पर डटे रहना चाहिए जिसका मार्ग सही होता है तथा उसे दूसरों की परवाह किए बिना दृढ़ता के साथ निरंतर आगे बढ़ता रहता है अंत में उसे विजय श्री अवश्य मिलती है और समाज उसका जय जयकार करता है। इस तरह की कविताओं को उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्यपुस्तक पर स्थान दिया जाना चाहिए।
- हमें भी कवि की भावना के अनुरूप परोपकारी साफ स्वच्छ नियति वाला स्वार्थी निष्कलंक सत्चरित्र जैसे गुणों से युक्त इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए इसी में देश समाज का कल्याण निहित है।
- आजकल लोगों के मन में दूसरों के प्रति अनेक प्रकार की कटुता भरी हुई है, लेकिन जब वह बोलते हैं, तो उसके मुख से मधुर स्वर लहरियाँ ही निकलती है| अतः लोगों की चिकनी चुपड़ी बातों से सावधान रहते हुए एक बार देखकर ही विश्वास करना चाहिए। इस कविता को उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया जाना चाहिए।
- संगीत का मनुष्य के जीवन में गहरा असल होता है| संगीत मनुष्य को साधू भी बना सकता है और डाकू भी| आज का युवा वर्ग जिस प्रकार अश्लील और भोंडे गीत संगीत सुनते हैं, उनके विचार उसी प्रकार के होते हैं| अतः युवाओं को राष्ट्र प्रेम, जीवन उपयोगी, संस्कृति आधारित गीतों को सुनने लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे उनके अंदर राष्ट्रप्रेम और संस्कृति की भावना जागृत हो सके। इस तरह की कविताओं को माध्यमिक शिक्षा स्तर पर हिंदी की पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थियों को किसान की भांति कर्मयोगी, थकान रहित, परिश्रम करते हुए अध्ययन के दौरान आने वाली विभिन्न कठिनाइयों को अपने जीवन का अंग मानते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। अपने काम के साथ-साथ कुछ समय के लिए हमें प्रकृति का भी आनंद लेना चाहिए, क्योंकि प्रकृति ही वह शक्ति है; जो हमें इस विश्व में सब कुछ प्रदान करती है।

6.3 सुझाव

- हर मनुष्य में अपार संभावनाएँ होती हैं, यदि उनकी सही समय पर परख की जाए तो छिपी हुई प्रतिभाएँ समाज के सामने आ सकती हैं|
- केशव तिवारी की कविताएँ जन सरोकारों से जुड़ी हुई हैं, इसलिए इन्हें लोगों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए| जिससे लोग अपने शहर के कवि से परिचित हो सकें|
- इस आधुनिक चकाचौंध के युग में जब व्यक्ति और इन्टरनेट में ही दुनिया का समूचा ज्ञान का साधन मानता है, जिससे मानसिक तनाव और चिड़चिड़ापन बढ़ रहा है| इससे बचने का सबसे अच्छा और सरल उपाय या है कि लोगों का

ध्यान कविता कहानियों को पढ़ने की ओर आकर्षित किया जाए| लोगों के मन में किताब पढ़ने की रूचि पैदा की जानी चाहिए|

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और लोक परम्पराओं से उसका अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है| इसलिए लोकधर्मी कविताओं, जिनसे समाज का लगभग अधिकांश तबका जुदा हुआ है| उन्हें पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए|
- विकास की जिस अंधी दौड़ में हमारा समाज चल पड़ा है, उसका चरम बिंदु विनाश है| ऐसे में प्रकृति की रक्षा करना हर मनुष्य का कर्तव्य बन जाता है| आज चारों ओर जंगल काटे जा रहे हैं और कंक्रीट का जंगल तैयार किया जा रहा है| इसलिए प्रकृति को लौटो विषय पर समाज में जागरूकता पैदा की जानी चाहिए|

6.4 शैक्षिक उपादेयता

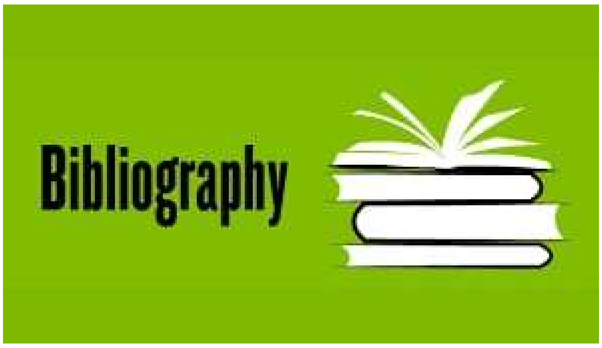
- किसी भी शैक्षिक शोध में शैक्षिक उपादेयता अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत लघु शोध का शीर्षक केशव तिवारी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन है, जिसके अंतर्गत कवि केशव तिवारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया| शिक्षक-विद्यार्थी एवं जनसामान्य इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन सफल कर सकेंगे।
- प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कवि केशव तिवारी की 8 मूल्यपरक रचनाओं का भावार्थ एवं प्रासंगिकता सहित विवेचन किया गया है| जिन्हें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थी बुंदेलखंड के प्रसिद्ध कवि के लेखनी से परिचित हो सके तथा उनके काम का अभिव्यक्त संवेदनाओं को आत्मसात कर सकें।
- कवि केशव तिवारी ने भारतीय जीवन के उन सभी पक्षों को अभिव्यक्ति दी है, जो हम सभी के साथ अनुस्यूत हैं। क्या सुख, क्या दैन्य, क्या श्रम से पस्त जीवन, क्या टूटती आकांक्षाओं में दम तोड़ते सपने, क्या क्रूर व्यवस्था के पाखण्ड, क्या प्रजातंत्र का खोखला खेल और इन सबसे अलग प्रकृति के समग्र उपादानों पर न्यौछावर कवि की अनुभूति की वह अप्रतिम मानवीय संसक्तिः जो जीवन को नई चेतना से अनुप्राणित कर देती है। उनकी कविताओं में हवा, धूप, नदी, बादल, पेड़- पौधे, पत्थर, पहाड़, सब को हम नई तरह से देखते हैं। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से वस्तुओं और जीवों और मनुष्य की निजता, जीवन और विजय संघर्ष की गाथा रची है।
- प्रगतिशील कवि होने के नाते उन्होंने प्रकृति के माध्यम से भी अन्याय, शोषण और अत्याचार का विरोध किया है। वे किसानों के प्रतिनिधि है और ठेठ ग्रामीण जीवन से लेकर श्रमिक की समग्रता ही उनकी मुख्य काव्य वस्तु है। शिक्षक विद्यार्थी एवं जन समान्य कवि केशव तिवारी के काव्य में अभिव्यक्त प्रकृति की संवेदना एवं आम आदमी के दुःख दर्द को महसूस कर सकेंगे एवं उससे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगे|

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किये गये लघु शोध-प्रबन्ध का शीर्षक "केशव तिवारी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन" है| प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में केशव तिवारी के कविता संग्रहों को आधार माना गया है। जिसमें उनकी कविताओं के भावार्थ एवं शैक्षिक प्रासंगिता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोध हेतु सुझावों के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत करता है। ये आगामी शोध हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं—

- भावी शोध में केशव तिवारी जी की अन्य कविताओं को सम्मलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुन्देलखण्ड के अन्य कवियों को सम्मलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में कवि केशव तिवारी के साथ अन्य समकालीन कवियों के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि केशव तिवारी जी की रचना पर आधारित है। भावी शोध में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में कवि केशव तिवारी का शैक्षिक योगदान का अध्ययन अन्य विद्वानों के शैक्षिक योगदान के अध्ययन से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- केशव तिवारी जी के सामाजिक एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर भावी शोध किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

यादव, विजय बहादुर (2013)। *मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान परिपेक्ष में प्रसंगिकता का एक समीक्षात्मक अध्ययन*। पी-एच०डी० शोध-प्रबन्ध,, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

http://hdl.handle.net/10603/239907

राजेश कुमार (1998)। *ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक एवं आर्थिक प्रश्नों का स्वरूप: चंदौली जिले के माधोपुर ग्राम के उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*। एम०एड० लघु शोध-प्रबन्ध, जगत स्नातकोत्तर महाविद्यालय जगतपुर, वराणसी

http://hdl.handle.net/10603/179047

शर्मा, सुनीता (2022)। *स्वामी रामसुखदास जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता*| शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, राजस्थान।

http://hdl.handle.net/10603/480381

दुबे, दयाशंकर (1992)। *शिक्षाशास्त्री के रूप में जॉन डीवी और महात्मा गांधी का एक तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान भारत में शिक्षा हेतु उनकी संगति*| पी-एच०डी० शोध-प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

http://hdl.handle.net/10603/10624

सिंह, रेनु (2008)। *भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रुप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में*| पी-एच०डी० शोध-प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्याल, झांसी।

http://hdl.handle.net/10603/12262

गुप्ता, कु० अर्चना (1990)। *महात्मा गांधी एवं विनोभा भावे के शैक्षिक विचारों का नवीन शिक्षा नीति के परिपेक्ष में आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन*| पी-एच०डी० शोध-प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

http://hdl.handle.net/10603/14923

रवि कुमार (2018)। *सह-अस्तित्ववाद मध्यस्थ दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ*| पी-एच०डी० शोध-प्रबंध, उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर, राजस्थान।

http://hdl.handle.net/10603/290682

तिवारी, केशव (2005)। *इस मिट्टी से बना*| विदिशा: रामकृष्ण प्रकाशन|

तिवारी, केशव (2010)| *आसान नहीं विदा कहना*| जोधपुर: रॉयल पब्लिकेशन|

तिवारी, केशव (2014)| तो काहे का मैं| प्रयागराज: सहित्य भण्डार|

परिशिष्ट

अ. हिन्दी भाषा के प्रमुख कवि

ब. केशव तिवारी से सम्बन्धित प्रकाशित लेख एवं ब्लाग

ग. जीवन वृत्त

केशव तिवारी से सम्बन्धित प्रकाशित लेख एवं ब्लाग

केशव तिवारी आज के महत्वपूर्ण कवियों में हैं। अनुनाद पर ही प्रकाशन तिथि के क्रमानुसार शिरीष कुमार मौर्य, सुबोध शुक्ल तथा महेश पुनेठा के लेख आप इन तीनों के नाम पर क्लिक करके पढ़ सकते हैं। सुबोध शुक्ल ने अत्यन्त विस्तार से उन पर लिखा है, मैंने उनके संग्रह 'आसान नहीं विदा कहना' पर लिखा है और जिस संग्रह पर आशीष मिश्र की यह समीक्षा है, उसी पर महेश पुनेठा ने भी लिखा है।

आशीष मिश्र इधर की हिंदी समीक्षा में रेखांकित किए जाने वाले नौउम्र प्रतिभावान समीक्षक हैं। हिंदी कविता को नए सिरे और अपनी तरह से आंकने के उनके प्रयास अब हमारे सामने हैं। उनके निष्कर्ष वैचारिक हलचल से भरे हैं और संवाद की भरपूर इच्छा/अपेक्षा रखते हैं। आशीष कविता के अलावा जनपक्षीय चित्रकला पर भी लिख रहे हैं।

***



केशव तिवारी सार्थक कार्रवाई के कवि हैं

मूल्यांकन

सिद्धार्थ शंकर राय







केशव तिवारी लोक-सैलानी कवि न होकर लोकभूमि के रहवासी कवि है| उनकी लोक संवेदना का भूगोल अवध से लेकर बुंदेलखंड तक फैला हुआ है| केशव की कविताओं से इस पूरे क्षेत्र की नदियों, पठारों, बोलियों व लोक व्यवहारों का मानवशास्त्री संसार रचा जा सकता है| उन्होंने जायसी, तुलसी, पद्मीस, त्रिलोचन, मानबहादुर सिंह, ईसुरी, केदारनाथ अग्रवाल की काव्य-संवेदना को न सिर्फ हृदयस्थ किया है, बल्कि इसे अपनी कविताओं में ससंज्ञ लौटाते है| केशव तिवारी अवधी-बुंदेली के शब्दों, मुहावरों और कहन भंगिमा का खड़ीबोली से सहज संलयन करते है| साथ ही समकालीन टंकित काव्यभाषा से अलग इसे वाचिक भाषा की तरफ़ खींचते हुए उसकी लय और तान को इतनी खूबसूरती से साधते है कि कविताएं एक बार पढ़ी जाकर मन में घुल जाती है| इधर लिखी जा रही कविताओं में किसी हिंदी क्षेत्र का ऐसा ठोस भूगोल विरल हुआ है| ऐसे देखने पर केशव कविता के सपाट भूदृश्य में छविमय पठार लगते है|



केशव का गांव स्मृतियों की

अनुनाद

केशव तिवारी बुरास्ते 'तो काहे का मैं' - आशीष मिश्र

एक टिप्पणी छोड़ें / अनुनाद द्वारा / 3 सितंबर 2014

केशव तिवारी आज के मह सिद्धांत पूर्ण सिद्धांत में हैं। अनुनाद पर ही प्रकाशन तिथि के सह-लेखक शिरीष कुमार मौर्य, एसडीओपी शुलक और महेश पुनेठा के लेख को आप पत्रिका के नाम पर क्लिक करके पढ़ सकते हैं। सब्स्क्राइब कंपनी ने अपूर्व बुनियादी विस्तार से एक पर लिखा है, मैंने उनका संग्रह 'आसान नहीं विदा कहा' पर लिखा है और जिस संग्रह पर आशीष मिश्र की यह समीक्षा है, उसी पर महेश पुनेठा ने भी लिखा है।

आशीष मिश्र यहाँ के हिंदी समीक्षकों में शामिल हैं, जो नौम्र प्रतिभावान समीक्षक हैं। हिंदी कविता को नए सहकर्मी और अपनी तरह से आदाने के उनका प्रयास अब हमारे सामने है। उनके निःसंदेह

> केशव तिवारी का तनाव यह है कि वे फूल के साथ उसके सुवास को भी नष्ट होते नहीं देख सकते| यह एक गहन सांस्कृतिक जिम्मेदारी है, क्योंकि ईंट-पत्थरों की तरह अलग-विलग व्यक्तियों की भीड़ न मनुष्यता का स्वप्न है न कविता का|

गांवों का संरचनात्मक अंतर्विरोध सामाजिक मनोविज्ञान, सौंदर्यबोध और काव्य प्रतिमानों को भी उलझा देता है| दलित और स्त्रियां गांवों को वैसे ही मोहासक्त होकर नहीं देखतीं जैसे उच्च वर्ण पुरुष| सूरज पाल चौहान की कविता, 'मेरा गांव/कैसा गांव?/ न कहीं ठौर/नहीं ठांव', इसी अंतर्विरोध की एक सरल अभिव्यक्ति है| यह बात जायज है कि उस व्यक्ति को गांव क्यों याद आए जिसके लिए वह दमन और अपमान की दुस्सह वास्तविकता है| लेकिन दूसरे प्रश्न भी वस्तुगत जवाब की मांग करते हैं, क्या शहरों की गंदी झुग्गियों में उन्हें हवा-पानी, सुरक्षा और आत्मसम्मान मिल गया? अगर ऐसा होता तो इस महामारी में अंतिम आश्रय के लिए लाखों लाख लोग गांवों की तरफ न भागते| कविता में इस संरचनात्मक तनाव का सरलीकरण दो तरह से होता है| पहले तरह के लोग इस पूरी संरचना का सौंदर्यीकरण करते हैं| दूसरे तरह के लोग सर्वनकारवादी हैं| बहुसंख्यक लोकवादी कवियों की तरह पुरानी संरचना में मौजूद दमन का सौंदर्यीकरण उतना ही आसान है जितना

केशव तिवारी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन



केशव दादा की कविता में
एक नई नूरानी देखी
अवधी के आँगन का बिरुआ
हिंदी में यह छाहीं देखी

9 789334 059854